Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 8

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

22 फरवरी 2018 ई. 5 जमादी उस्सानी 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं बेधड़क कहता हूं कि ख़ुदा तआला के फज़ल और इनायत से वह इमामुज़्ज़मान मैं हूं जिस की पैरवी सारे मुसलमानों को करनी ख़ुदा तआला की तरफ से फर्ज़ है। मैं रूहानी रूप से सलीब को तोड़ने के लिए और इसी प्रकार मतभेदों को दूर करने के लिए भेजा गया हूं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस ज़माने का इमामुज़्ज़मान कौन है जिस का अनुकरण सारे मुसलमानों और नेकों और ख़वाब देखने वालों और इलहाम पाने वालों को करना ख़ुदा तआला की तरफ से फर्ज़ करार दी गई है। अत: मैं इस समय बेधड़क कहता हूं कि ख़ुदा तआला के फज़ल व इनायत से वह इमामुज़्ज़मान मैं हूं और मुझ में ख़ुदा तआला ने वे सारी निशानियां और सारी शर्तें जमा की हैं और इस सदी के सिर पर मुझे भेजा है जिस में से पन्द्रह वर्ष भी गुज़र गए और कोई आस्था मतभेद वाली इस से ख़ाली न थी। इसी प्रकार मसीह के नज़ूल के बार में ग़लत विचार फैल गए थे और इस आस्था में भी मतभेद की यह अवस्था थी कि कोई ईसा अलैहिस्सालम का जीवन का मानने वाला था और कोई मौत का और कोई शारीरिक नज़ूल मानता था और कोई प्रतिरूप नुज़ूल का मानने वाला था। और कोई दमिश्क में उन को उतार रहा था और कोई मक्का में और कोई बैयतुल मुकद्दस में और कोई इस्लामी लश्कर में और कोई विचार करता था कि हिन्दुस्तान में उतरेंगे। अत: ये सारी विरोधी बातें और कथन एक फैसला करने वाले हकम को चाहते थे। अत: वह हकम फैसला करने वाला मैं हूं। मैं रूहानी रूप से सलीब को तोड़ने के लिए और इसी प्रकार मतभेदों को दूर करने के लिए भेजा गया हूं।

(ज़रूरतुल इमाम, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 13, पृष्ठ 495)

☆ ☆ ☆

123 वें जलसा सालाना कादियान की संक्षिप्त रिपोर्ट (जलसा सालाना के आरम्भ से 126वां साल) (अन्तिम भाग-4)

अहमदियत के केन्द्र कादियान दरुल-अमान में 123 वें जलसा सालाना का सफल आयोजन।

☆ मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया इन्ट्रनेश्नल के द्वारा हज़रत अमीरुल-मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के जलसा में शामिल होने वालों को ईमान वर्धक समापन ख़िताब। ☆ देशों का प्रतिनिधित्व, 20,048 अहमदियत के परवानों का जलसा में शामिल होना। ☆ हुज़ूर अनवर के समापन सत्र के अवसर पर लंदन में 5,300 अहमदियत के परवानों का शामिल होना। ☆ नमाज़ तहज्जुद, ☆ दर्सुल कुरआन और ज़िक्र से परिपूर्ण वातावरण ☆ उलमा की महत्त्वपूर्ण तकरीरें, ☆ सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन, सम्माननीय मेहमानों की परिचयात्मक तकारीरें ☆ घरेलू और विदेशी भाषाओं में अनुवाद ☆ जमाअत के दोस्तों की जानकारी में वृद्धि के लिए प्रशिक्षण पर आधारित डॉक्यूमेंट्री और विभिन्न जानकारीपूर्ण प्रदर्शनियों का आयोजन। ☆ 32 निकाहों का एलान ☆ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसा की कवरेज ☆ शांत और सुखद मौसम में जलसा की सभी कार्रवाई की तकमील। 20 से 22 दिसंबर अरबी कार्यक्रम "इस्मउ सौतस्समा जाअल मसीह जाअल मसीह" का कादियान के एम टी ए से सीधा प्रसारण , 3 से 5 जनवरी The Messiah of the Age के विषय पर अफ्रीका के लिए लाइव कार्यक्रम का प्रसारण

30 दिसंबर 2017

दूसरे दिन - दूसरा इजलास

दूसरे दिन का दूसरा सत्र, आदरणीय मुहम्मद शरीफ़ औदा साहिब अमीर जमाअत अहमदिया फिलस्तीन की अध्यक्षता में शुरू हुई। यह इज्लास, परंपरा के अनुसार जलसा सर्व धर्म सम्मेलन के रूप में मनाया गया जिस में विशेष रूप से भारत के विभिन्न क्षेत्रों से सियासी सामाजिक और धार्मिक लीडर शामिल हो कर अपने अपने विचार व्यक्त करते हैं। इज्लास में कुरआन की तिलावत आदरणीय हाफिज अब्दुस्सालम साहिब छात्र जामिया अहमदिया रबवा पाकिस्तान ने सूर: अलबक़रा: आयत 285 से 287 की जिसका अनुवाद आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री साहिब संपादक अखबार बद्र हिंदी ने हिंदी भाषा में पढ़ कर सुनाया। इसके बाद आदरणीय रिज़वान अहमद ज़फर साहिब मुरब्बी सिलसिला कादियान और उनके साथियों ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे का मंज़ूम कलाम

"अपने देश में अपनी बस्ती में इक अपना भी तो घर था"

तराने के रूप में सुनाया।

सदर जलसा ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वह दुआ जो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अपने ख़ुत्बा जुम्अ: दिनांक 29 दिसंबर 2017 ई में पढ़कर सुनाई थी वह दुआ पढ़ी और दर्शकों को अपने साथ इस दुआ को दोहराने की हिदायत फरमाई दर्शकों ने उन के साथ वह दुआ दुहराई।

इस इज्लास में एक ही तक़रीर था जो आदरणीय मौलवी ज्ञानी तनवीर अहमद ख़ादिम साहिब उप नाज़िर दावत इलल्लाह मरकज़िया ने "मौऊद अकवामे आलम" विषय पर पंजाबी भाषा में की। आप ने सूर: अलबकर: की आयत 33 की तिलावत की और उसका अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

नंबर 7 और 8 पढ़कर सुनाया और बताया कि वर्तमान युग में हर तरफ नास्तिकता और धर्म से विमुखता है। लोगों ने बुराई और गलत कार्यों में सीमा पार कर ली है पाप और निर्लज्जता हर जगह फैले हुए हैं धार्मिक शिक्षाओं का कोई मूल्य नहीं रहा। आपने कहा था कि सिखों की धार्मिक पुस्तक, गुरू ग्रंथ साहिब में भी इन बुराइयों का उल्लेख है। इसी प्रकार, हिंदू धर्मों में, इस पुराणों में भी इस कलयुग का वर्णन किया गाय है जिस का सार महाभारत में वर्णन किया गया है। और यहूदी और ईसाई धर्म में भी अंतिम युग के हालात बयान किए गए हैं। और कहा कि सभी धर्मों ने इस कलियुग के हालात का विस्तृत उल्लेख अपनी धार्मिक पुस्तकों में क्या हुआ है। और उनमें यह उल्लेख भी मौजूद है कि उनके पापों और उपद्रवों को दूर करने के लिए एक अवतार उतरेगा जिसको मौऊद अक्वामे आलम के नाम से जाना जाएगा। मज़हब इस्लाम में भी अंतिम समय में एक इमाम महदी और मसीह के आने की ख़बर दी गई है। और विनीत यह बताना चाहता है कि वह अन्तिम नबी जिस की खुशख़बरी इस्राईल के नबियों और मसीह नासरी और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी वह आ चुका है। और वह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी मसीह मौऊद अलैहिस्सालम हैं। जिन का जन्म 13 फरवरी 1835 ई को कादियान में हुआ आप अपने एक मंज़ूम कलाम में फरमाते हैं

मैं वह पानी हूं जो आया आसमा से वक्त पर
मैं वह हूं नूरे ख़ुदा जिस से हुआ दिन आशकार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं मुझे ख़ुदा की पवित्र और बरकत वाली वह्यी से सूचना दी गई है कि मैं उसकी तरफ से मसीह मौऊद और महदी मौऊद और आंतरिक और बाहरी मतभेद मिटाने का आदेश हूँ । आपके मुकाबला में बड़े बड़े उलेमा खड़े हुए और सब विफल और नामुराद हुए। महोदय ने ने कहा कि जमाअत की नींव 1889 ई में लुधियाना में रखी गई थी, उस समय चालीस श्रद्धालुओं ने आप के हाथ पर बैअत की। आज जमाअत के लोगों की संख्या करोड़ों तक पहुंच गई है। जमाअत का पौधा 210 देशों में लग चुका हैं जमाअत अहमदिया के मौजूदा इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब पूरी दुनिया में शांति और भाईचारा तथा शांति का संदेश दे रहे हैं। अंत में आप ने जमाअत अहमदिया की तरक्की के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उपदेश पढ़ कर सुनाए।

इस तक़रीर के बाद, निम्नलिखित राजनीतिक और धार्मिक नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किए ।

(1) श्री फतेह जंग सिंह बाजवा (एम एल ए कादियान) सदर जलसा और सामेईन को सलाम का उपहार पेश किया और फरमाया कि उनके परिवार का पिछले 70 साल से जमाअत अहमदिया के साथ बड़ा प्यार भरा संबंध है। और जमाअत के लोगों के साथ बहुत प्यार है मुझे गर्व है कि मैं कादियान शहर में रह रहा हूं, जहां से अहमदिया जमाअत की नींव रखी गई है। यह एक पवित्र जमीन है अंत में, उन्होंने सभी मेहमानों का स्वागत किया और उन का धन्यवाद किया।

(2) आदरणीय सुनील जाखड़ साहिब (कांग्रेस अध्यक्ष जमाअत पंजाब और एम पी गुरदासपुर)

उन्होंने सदर जलसा और हाज़रीन को सलाम कहा और 123 वें सम्मेलन की मुबारकबाद दी और कहा कि मैं यहाँ पहली बार आया हूँ यह मेरा सौभाग्य है। यहां मानवता के ज़िन्दाबाद के नारे हैं, जो कि अपने आप में उदाहरण हैं मैंने कभी किसी को इंसानियत ज़िन्दाबाद के नारे लगाते हुए नहीं सुना। मानवता के नारे वास्तव में बेमिसाल हैं। इस शांतिपूर्ण जमाअत पर कभी सूर्यास्त नहीं हो सकता। जमाअत जो कोशिश कर रही है वह सम्मान के योग्य है जमाअत नफरत की आन्धी को रोकने का जो महान काम कर रही है वह प्रशंसा के योग्य है। सम्माननीय अतिथि ने अंत में सभी का धन्यवाद दिया।

(3) जनाब सेवा सिंह सेखवां साहिब (पूर्व विधायक कादियान) ने सदर जलसा और सामेईन को सलाम का तोहफा पेश किया और कहा कि जमाअत ने इस्लाम की शांति की शिक्षा को फैलाया है। सिख धर्म का भी इस्लाम के साथ गहरा संबंध है। जब सिख धर्म में कोई मुश्किल आई है, तो मुसलमानों ने सिखों का समर्थन किया है। सिख धर्म में कई उदाहरण हैं गुरू गोबिंद सिंह जी को कई बार मुसलमानों की मदद की है। इन दोनों धर्मों में बहुत प्यार है। हरि मंदिर, जो सिखों का पवित्र स्थान है, इस की नींव एक मुस्लमान ने रखी ताकि आपस में भाईचारा और इंसानियत को प्रोत्साहन मिल सके। जमाअत जो अमन और प्रेम का सन्देश सारी दुनिया में फैला रही है वह प्रशंसा के योग्य है। इस जलसा की जितनी भी सराहना की जाए कम है। जमाअत ने आज सारे धर्मों को एक मंच पर ला खड़ा किया है। अंत में, आदरणीय अतिथि ने सभी का धन्यवाद किया।

(4) श्री तीक्ष्ण सूद साहिब (सीनियर लीडरशिप बी.जे.पी) माननीय अतिथि ने सदर जलसा और सामेईन को बधाई दी और मैं पहले भी जलसा में आया हूं। कादियान एक स्वच्छ और पवित्र स्थान है यहाँ सब प्यार भाईचारे के बारे में बात करते हैं इस युग में सभी धर्म एक-दूसरे से आगे बढ़ना चाहते हैं लेकिन मानवता को आगे नहीं बढ़ाना चाहते हैं। मानवता वह धर्म है जो प्यार का आदेश देता है। मुहब्बत सब से नफरत किसी से नहीं का मानवता का नारा है जमाअत अहमदिया के लोग मुझ अलग-अलग देशों में मिलते हैं। हर जगह प्रेम प्यार का संदेश देते हैं जमाअत दुनिया में शांति स्थापित करने में एक बड़ी भूमिका निभा रही है। यहां सभी लोग जमा हुए हैं यह अपने आप में एक उदाहरण है। आज का यह दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। आप सब को इस ख़ुशी के अवसर पर आप सभी को बधाई। जमाअत अपनी शांति की योजना में सफल हो यही मेरी दुआ है।

(5) श्री राज कुमार विर्क साहिब (पूर्व एम.एल.ए अमृतसर) सदर जलसा और सभी लोगों को मुहब्बत भरा सलाम और स्वागत है। इस जलसा में मानवता की जो शिक्षाएं वर्णन की जा रही हैं। आप सभी बहुत भाग्यशाली हैं, जो आज यहां एक शांतिपूर्ण माहौल में जमा हुए हैं। जो मानवता का संदेश आप दे रहे हैं वह सबसे बड़ा संदेश है। पंजाब की भूमि, जहां सारी दुनिया से लोग आए हैं यह प्यार की और शांति की भूमि हैं। आपसी भाईचारा की ज़मीन है। यह एक पवित्र ज़मीन है। मैं आप सभी का आभारी हूं जिन्होंने मुझे पूर्ण प्रेम से आने के लिए आमंत्रित किया। दुनिया भर में धर्मों की दुकानें हैं लेकिन वास्तव में, केवल मानवता का धर्म आवश्यक है दुनिया के सभी धर्मों की दूरियां मिल बैठ कर हल हो सकती हैं कादियान की पवित्र धरती में सभी धर्मों का आदर किया जाता है। मैं मानवता की सेवा के लिए आप सब का आभारी हूँ।

(6) श्री स्वामी सुशील साहिब (कॉनर इंटरनेशनल धर्म दिल्ली) जलसा के सभी हाज़रीन को बधाई। सभी के लिए अभिवादन आप जो नारे लगा रहे हैं इन नारों ने हम सब के दिल को छू लिया है। मानवता का यह जलसा सभी धर्मों का एक सर्व सम्मत अनुष्ठान है। अहमदिया जमाअत ही वह एकमात्र जमाअत है जो सभी को एक साथ जोड़ती है। मानवता की असली तस्वीर पूरे देश में केवल जमाअत अहमदिया ही सामने ला रही है। ऐसा संदेश जो अन्य धर्मों के गुरूओं के सम्मान की बात करता है, आज के लिए सबसे ज़रूरी है। आपका समुदाय शांति की एक खुला किताब है मैं आप सभी को अच्छे कामों के लिए धन्यवाद करता हूं यह काम बहुत मुश्किल है कोई दूसरा नहीं कर सकता। अहमदिया जमाअत के संस्थापक इस छोटा बस्ती में पैदा हुए थे जिन्होंने दुनिया में प्रेम और मुहब्बत का संदेश फैलाया। इस्लाम को मानने वाले अगर कोई वास्तविक लोग हैं, तो आप ही वह हैं। बहुत से ग़ैर अहमदी लोग मुझे अहमदिया फिर्का के लोगों से मिलने से रोकते हैं। जब अहमदी मुझे उन से मिलने से नहीं रोकते, तो उन का मुझे अहमदियों से मिलने से रोकना ग़लत है। जब अधर्म होता है, तब कोई न कोई अवतार अवतरित होता है। मैं आप सभी का धन्यवाद करता हूं और आप सभी का स्वागत करता हूं।

(7) श्री रमेश कुमार साहिब (हेड दुर्गायाना मंदिर अमृतसर)

सदर जलसा और सामेईन जलसा को मुहब्बत भरा नमस्कार। हम सनातन धर्म के मानने वाले हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को शांति भाईचारा की शिक्षा देता है। हमारे धर्म में नफरत का कोई स्थान नहीं है। मैं सभी जलसा के सामईन को दुर्गयाना मंदिर आने की दावत देता हूं। आप सभी वहां आएं और देखें कि कैसे हम मानवीय सेवा और भलाई का काम कर रहे। जिस तरह से जमाअत विश्व स्तर पर मानवता का कर रहा है, हम अभी इस स्तर पर नहीं हैं। जब अल्लाह तआला ने सभी जीवों को एक जैसा बनाया, तो हम आप कौन हैं? अपने धर्म की शिक्षाओं पर अवश्य पालन करना चाहिए और अन्य धर्मों का सम्मान करना चाहिए। मानवता आज दुनिया से दूर जा रही है मैं आप सभी को बधाई देता हूं। अगर धर्मों ज़िम्मेदार लोग प्यार मुहब्बत का पैगाम दें तो इंशा अल्लाह मानवता का बोलबाला होगा। हम जमाअत अहमदिया के साथ हर कदम से हैं आप सभी को धन्यवाद।

(8) श्री सुंत बाबा भाई जसपाल सिंह ने सदर जलसा और सामेईन को धन्यवाद दिया। आप सभी को यहाँ एक साथ देख कर बहुत ख़ुशी हो रही है हमारे लिए यह बहुत गर्व की बात है कि परमेश्वर ने अपने एक नबी को पंजाब की धरती में पैदा जिन्होंने पूरी दुनिया में मानवता का संदेश दिया। जिन्होंने सभी लोगों सभी धर्मों का सम्मान करने की शिक्षा दी है। जमाअत शांति का संदेश दुनिया में फैला रही है जिस दिन मुझे इस जलसा में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था, तो मैं उस दिन से बहुत बैचेनी से इस दिन का इंतज़ार कर रहा था। मैं आप सभी को धन्यवाद करता

पृष्ठ 8 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

दो दिन पहले सिलिसिले के एक पुराने ख़िदमत करने वाले साहिबज़ादा आदरणीय मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद साहिब की वफात हुई है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। इन को अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से रूहानी और शरीरिक दोनों तरह से रिशतों का सम्मान प्रदान किया है। यह अल्लाह तआला का कानून है कि जो इस दुनिया में आया है उस को एक दिन इस दुनिया से वापस भी आना है। प्रत्येक चीज़ को फना होना है और हमेशा रहने वाली ज़ात केवल अल्लाह तआला की है परन्तु ख़ुश किस्मत होते हैं वे लोग जो अल्लाह तआला की दी हुई इस ज़िन्दगी को मकसद वाला बनाने की कोशिश करते हैं और अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। वे इस बात को समझते हैं कि किसी नेक आदमी या वली या नबी के साथ केवल शारीरिक रिश्ता होना ही उन के जीवन के उद्देश्य को पूर्ण नहीं बना सकता और न ही अल्लाह तआला की प्रसन्नता को पाने वाला बना सकता है बल्कि इंसान का ख़ुद अपना काम और कर्म है जो उस को अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाला बनाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पड़पोते आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद साहिब (नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान) की वफात, मरहूम की धार्मिक ख़िदमतें और उत्तम गुणों का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 जनवरी 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

दो दिन पहले सिलिसिले के एक पुराने ख़िदमत करने वाले साहिबज़ादा आदरणीय मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद साहिब की वफात हुई है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। इन को अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से रूहानी और शरीरित दोनों तरह से रिशतों का सम्मान प्रदान किया है। यह अल्लाह तआला का कानून है कि जो इस दुनिया में आया है उस को एक दिन इस दुनिया सा वापस भी आना है प्रत्येक चीज़ को फना है और हमेशा रहने वाली ज़ात केवल अल्लाह तआला की है परन्तु ख़ुश किस्मत होते हैं वे लोग जो अल्लाह तआला की दी हुई इस ज़िन्दगी को मकसद वाला बनाने की कोशिश करते हैं और अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं । वे इस बात को समझते हैं कि किसी नेक आदमी या वली या नबी के साथ केवल शारीरिक रिशता होना ही उन के जीवन को उद्देश्य पूर्ण नहीं बना सकता और न ही अल्लाह तआला की प्रसन्नता को पाने वाला बना सकता है बल्कि इंसान का ख़ुद अपना काम और कर्म है जो उस को अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाला बनाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फरमाया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाह तआला अन्हा को वर्णन फरमाते थे कि फातिमा केवल तुम मेरी बेटी होने के कारण अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त नहीं कर सकती।उस की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपने जीवन को उस के आदेशों के अनुसार ढालने की कोशिश करो और जब यह कर लो तो तब भी अल्लाह तआला का भय रहना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारी इन कोशिशों को स्वाकीर करे। और अपने फज़ल से अन्जाम अच्छा करे।

(मल्फूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 343)

मैं खुद इस बात को जानता हूं और बड़ा गहरा व्यक्तिगत संबंध भी मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद के साथ भी था। उन्हें अच्छी तरह से देखने का मौका मिला और इसी तरह लोगों ने मुझे लिखा था कई पत्र आ चुके हैं कि उन्होंने विनम्रता से अपने वक्फ को निभाने और अपना काम करने की कोशिश की। कभी भी पारिवारिक गर्व की भावना को व्यक्त नहीं किया। जब पिछले साल यहां जलसा पर आए थे, तो अन्त भला होने की चिन्ता का मुझ से भी वर्णन किया था और उस आदमी का उदाहरण दिया जो बहुत बुज़ुर्ग आदमी था, और वह फौत होते हुए कह रहा था कि अभी नहीं अभी नही, और इस प्रकार फौत हो गया। अन्त में उसके मुरीदों ने बहुत दुआ की कि, इसका कारण क्या था? अभी नहीं अभी नहीं। एक दिन सपने में, मुरीद ने देखा वही बुज़ुर्ग नज़र आए इन से पूछा कि आप वफात के समय अभी नहीं अभी नहीं करते रहे तो उन्होंने कहा कि बात यह है कि जब मेरा अन्तिम समय था तो शैतान मेरे पास आया और उस ने कहा कि तुम मेरे हाथ से निकल गए। तुम बड़े नेक काम करते हो और मैं कहता रहा कि अभी नहीं अभी नहीं। जब तक जिस्म में सांस है कोई पता नहीं क्या हरकत कर दूं। तू मैं मरते समय भी शैतान को अभी नहीं अभी नहीं कह रहा था। और अल्लाह तआला ने इसी अवस्था में जान निकाली और मैं जन्नत में हूं।

(उद्धरित मल्फूज़ात जिल्द 5, पृष्ठ 306)

तो यही तरीका है, उन का जिन को अपने अन्जाम की चिन्ता होती है। बहरहाल उन्होंने मुझे यह उदाहरण दिया। बड़ी चिंता थी। वक्फ की रूह की भावना को समझते थे और समझते हुए काम करने वाले बुज़ुर्ग थे। यहां के समय के अनुसार, परसों रात के समय लगभग दस बजे उन की वफात हुई। 85 वर्ष उन की उम्र थी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रपौत्र और हज़रत मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे बड़े बेटे थे उनके पोते थे और हज़रत मिर्ज़ा अज़ीज़ साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो के पुत्र थे। हजरत मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वह पोते हैं जिन्होंने अपने पिता से पहले बैअत की थी।

12 सितंबर, 1932 को उनका जन्म लाहौर में हुआ था और 21 अप्रैल 1945 ई को उन्होंने साढ़े बारह वर्ष की आयु में एक वक्फे ज़िन्दगी का फार्म भरा था, जबकि वह नौवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। फिर कादियान में हाई स्कूल से मैट्रिकुलेशन किया फिर उन्होंने टी.आई कॉलेज से अध्ययन किया और उस के बाद हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला के आदेश पर सरकारी कॉलेज लाहौर से एम.ए अंग्रेज़ी किया। 10 सितंबर 1956 ई को एक वक्फे ज़िन्दगी के रूप में, आप ने टी आई कालेज रब्वा में पढ़ाना शुरू किया और वहां अंग्रेज़ी विभाग में वहां 17 साल पढ़ाने के काम में व्यस्त रहे। बहुत मेहनत से लेक्चर तैयार करते थे। मैं भी उन से पढ़ा हुआ हूं और बहुत सारे शागिर्दों ने लिखा है कि बड़ी मेहनत कर के आते थे और बड़ी मेहनत से पड़ाते थे। अपने विषय पर उन्हें पूरी महारत थी। इसलिए, छात्रों में बहुत लोकप्रिय थे। छात्र उन्हें पसंद करते थे। 1964 ई में अंग्रेज़ी फैनेटिक कोर्स के लिए ब्रिटिश काउंसिल की स्कौलरशिप पर एक वर्ष के लिए इंग्लिस्तान आए थे।

यहां लीडस विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की।

इनकी जो जमाअत की कुछ सेवाएं प्रस्तुत करता हूं। 1974 ई के आपात कालीन हालात में सुंदर साहिबज़ादा मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस के साथ सहयोग किया यानी उनकी सेवा के लिए हर समय वहीं रहते थे। इन परिस्थितियों में दो तीन महीने कसरे ख़िलफत में ही रहे। इसी तरह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो की स्वीकृति से रबवा में अनाथ और ग़रीब बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए 1962 ई के मध्य में एक "दारुल इकामा नुसरत" का क़ियाम अमल में लाया गया। बाद में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने इस का नाम "मद इमदाद छात्र" रखा। इस विभाग के 1978 ई से जुलाई 1983 ई तक आप निगरान रहे। इसके बाद यह काम नज़ारत तालीम के पास चला गया।

30 अप्रैल, 1973 को, आप नाज़िर ख़िदमते दर्वेशां निर्धारित हुए और 1 मई 19 88 ई से सितम्बर 1991 ई तक आप नाज़िर अमूरे आम्मा के रूप में सेवा करते रहे। अगस्त 1992 से मई 2003 तक नाज़िर अमूरे ख़ारजा रहे और इस के बाद मेरी ख़िलाफत के दौरान मैंने उन्हें फिर नाज़िर आला निर्धारित किया और अमीर स्थानीय रबवा भी। और बड़े उत्तम रूप से उन्होंने यह सेवा कीं। लगभग बारह साल मज्लसि इफता के मेम्बर भी रहे। 1973 ई में अल्लाह तआला ने उन्हें हज अदा करने की तौफीक़ भी दी।

उनका विवाह 26 दिसंबर, 1955 को हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने पढ़ाया था। और पांच छ: निकाह थे जो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने पढ़ाए थे। और मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब के बारे में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने ख़ुत्बा में जो फरमाया वह यह था कि आप फरमाते हैं कि यह लड़का भी हमारे परिवार में वक्फ है। मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद साहिब को अल्लाह तआला ने तौफीक प्रदान की कि वह अपने बच्चे को उच्च शिक्षा दिलाए। अत: उसका लड़का एम.ए में पढ़ रहा है। अभी पास तो नहीं हुआ। (यानी एम.ए पूरा नहीं हुआ) लेकिन अंग्रेज़ी में एम.ए की परीक्षा दे रहा है और कहते हैं कि अंग्रेज़ी में यह बहुत ही योग्य है। मेरा इरादा है कि बाद में यह कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में बाद में काम करे और इस के साथ यह भी कहा कि अनुवाद में भी काम आएगा।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 3, पृष्ठ 622 से 625 ख़ुत्बा 26 दिसंबर 1955 ई)

अल्लाह तआला ने उन्हें छह बेटों से नवाज़ा और चार बेटे उनके वक्फे ज़िन्दगी हैं। दो डॉक्टर हैं एक नज़ारत तालीम में नायब नाज़िर हैं उसने पी.एच.डी किया हुआ है और इसी प्रकार एक सलाहकार के रूप में, कानूनी दफ्तर में सहायक के रूप में हैं, उन्होंने कानून की पढ़ाई की हुई है। उप-संगठनों में भी विभिन्न पदों पर काम करने की तौफीक़ प्राप्त हुई। 2000 ई से 2003 ई के बीच सदर अंसारुल्लाह पाकिस्तान भी थे।

उन के एक बेटे डॉ मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब ने लिखा है कि उन को हज़रत ख़लीफुत मसीह सानी से बहुत अधिक मुहब्बत थी। कुछ साल पहले उन को दिल की तकलीफ शुरू हुई बल्कि एक लंबे समय से थी लेकिन धीरे धीरे बढ़ती रही। अधिक हो गई। यहसफर पर ऊकाड़ा जा रहे थे वहां से उन को पता चला तो उन के एक बेटे उन को लेने गए थे। डॉ नूरी भी उनके साथ थे। यह रास्ते में उधर से आ रहे थे कि मुलाकात हो गई। मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब कहने लगे कि पूरे रास्ते में यह दुआ करता रहा कि मैं रबवा पहुँच जाऊँ और हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के नक्शे कदम पर जान निकले। अर्थात वह बस्ती जहां आप दफन हैं और जो आप ने आबाद की। हज़रत ख़लीफुतल मसीह से इश्क तथा मुहब्बत की यह कहानी थी। फिर यही लिखते हैं कि जब यह बीमार हुए तो बीमारी में एक रात बड़ी उत्सुकता से उठ कर बैठ गए और कहने लगे अब मैंने एक लंबा सपना देखा है कि कुछ लोग हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी पर आपत्ति कर रहे हैं और लोग उस का जवाब नहीं दे रहे हैं यही कारण है कि आप बहुत परेशान थे क्यों लोग जवाब नहीं दे रहे हैं और फिर इसी बेचैनी में दोबारा सोए भी नहीं। यह अक्सर कहा करते थे कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी से विरोधियों का द्वेष बहुत अधिक है बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी अधिक है क्योंकि विरोधियों का यह विचार है और यह कुछ हद तक सही है बल्कि काफी हद तक सही है कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने जमाअत का निज़ाम बनाया और मज़बूत किया है। यदि आप यह प्रणाली नहीं बनाते, तो विरोधियों के विचार में जमाअत समाप्त हो जानी थी गो कि अल्लाह तआला की जमाअत है यह तो चलनी थी और यह सब कुछ होना था लेकिन कई हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी का विरोध इसलिए करते हैं कि आप ने जमाअत को एक मजबूत और दृढ़ प्रणाली दे दी।

1974 में, जैसा कि मैंने कहा, ख़लीफतुल मसीह सालिस ने जो एक टीम बनाई थी उस टीम का हिस्सा थे। उन्हें वहां सेवा की तौफीक़ मिली। यह कस्रे ख़िलाफत में रहा करते थे। फिर शायद डेढ़ महीने बाद उन्हें एक सप्ताह के बाद घर जाने की इजाजत थी, सात दिन बाद वह सात घंटों के लिए घर चले जाते थे। बच्चे भी उन को वहीं आकर मिला करते थे। यह कहते हैं कि उन दिनों में मैंने देखा कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस कई कई रातें सोए नहीं थे बल्कि बैठे-बैठे ही आराम कर लिया करते थे और पूरा दिन और पूरी रात या जमाअत के कार्यों में व्यस्त रहते या दुआओं में व्यस्त रहते और साथ ही ये लोग भी जो लोग ड्यूटी पर थे, फिर जागा करते थे ।

उनके यह बेटे उनकी तरफ से एक और रिवायत वर्णन करते हैं कि 1984 ई के हंगामे वाली अवस्था में यह हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की जो टीम थी उसमें शामिल थे। कहते हैं कि आप बताया करते थे कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस और हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की जब भी आपात स्थिति थी, बजाय किसी प्रकार panic के असामान्य रूप से रिलैक्स (Relax) रहा करते थे।

आप को यह भी सम्मान रहा कि जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने हिजरत की तो रबवा से कराची तक आप भी काफिले में शामिल थे। इसी तरह 2010 ई में जब लाहौर में 28 मई की घटना हुई है तो उस समय बावजूद बीमारी के आपात स्थिति में एक तो यह कि आप ने बड़ी हिम्मत से सभी मामलों को संभाला। फिर प्रत्येक शहीद का जब जनाज़ा आता तो इस का गर्मी के बावजूद ख़ुद जनाज़ा पढ़ाते और दफन के लिए ले जाते। इसी तरह गरिमा का बहुत अधिक ध्यान रखते थे। उनके बेटे मिर्ज़ा अदील अहमद लिखते हैं कि स्थानीय रबवा की रिपोर्ट जब हम भिजवाते तो कई बार या किसी दिन असावधानी के कारण आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम के साथ (स) ही लिख दिया गया। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अलैहिस्सलाम पूरा लिखा गया। इस पर आप ने विशेष रूप से ध्यान दिलाया कि पदों का ख्याल रखना चाहिए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरा लिखा करें। नमाज़ों की बहुत पाबन्दी करने वाले थे बहुत मजबूरी की अवस्था में नमाज़े जमा करते थे। यहां तक कि अन्तिम बीमारी में, जब अस्पताल में दाख़िल थे, केवल कुछ एक के सारी नमाज़े अपने समय पर अदा कीं।

आख़री दिनों में नाज़िर आला थे और नाज़िर आला की बहुत ज़िम्मेदारी होती है इसलिए वहां के जो मामले थे जमाअत के केसों के बारे में बहुत फिक्र थी। अस्पताल में भी बार-बार पूछते थे कि मामला की तारीख क्या है और अपडेट क्या है। इसी तरह जो लोग अपनी ख़ुशियों में, शादी के मौकों पर बतौर नाज़िर आला और अमीर स्थानीय बुलाते थे तो ज़रूर जाते थे कि अब यह मेरे कर्तव्यों में शामिल हो गया है क्योंकि समय के ख़लीफा का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। इसी तरह, मृत्यु पर भी लोगों के दु:ख के अवसर पर भी लोगों के पास जाया करते थे। फिर ज़रूरतमंदों को बीमारों को पूछने के लिए जाया करते थे और बावजूद बीमारी के समय में दफ्तर आना और पूरा समय रहना, काम करना उनका विशेष सिद्धांत था। अंतिम बीमारी के दिनों में भी दफ्तर आए तो बहुत सारे लोगों को अनुपस्थित पाया तो उन्होंने एक गोल किया कि अगर विनीत समय पर दफ्तर आ सकता है तो बाकी क्यों नहीं आ सकते। संगठनात्मक रूप से, प्रशासनिक रूप में, जहां पकड़ना होता था सख़्ती की, लेकिन प्रेम से। उन्हें यह सम्मान भी मिला कि हज़रत ख़लीफुतल मसीह सालिस की वफात जो इस्लामाबाद पाकिस्तान में हुई थी और वहाँ नमाज़ जनाज़ा पढ़ाया गया तो उन्होंने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाया क्योंकि अंजुमन के प्रतिनिधि थे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे भी वहां मौजूद थे। उन्होंने भी उनसे कहा कि आपको पढ़ाना चाहिए। आप बड़े भी हैं, लेकिन ख़लीफा राबे ने कहा,नहीं। और उन्हें ही कहा कि क्योंकि आप अंजुमन के प्रतिनिधि हैं, इसलिए आप नमाज़ जनाज़ा पढ़ाएं। इसी तरह हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस को स्नान देने का भी सम्मान मिला।

मुकरम मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब ने लिखा है कि 1974 ई के जो हालात थे। उन में यह दो तीन महीने वहां रहे। इस के बाद जब हालात बेहतर हुए तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने उन्हें कह दिया कि जाओ घर चले जाओ लेकिन कुछ काम जो किया करते थे उनकी दैनिक सुबह नाश्ते पर आकर रिपोर्ट देनी है और यह दैनिक लगातार आदेश लेकर जाते थे और अगले दिन, आकर फिर इस के

अनुपालन की रिपोर्ट दिया करते थे। इसी तरह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब लिखते हैं कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस की मृत्यु के बाद ख़िलाफत राबिया के चुनाव के दूसरे दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो "अलैय-सल्लाह" की अंगूठी थी वह हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह से कहीं misplace हो गई और हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह को बड़ी चिंता थी उन्होंने आदरणीय मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब को बुलाया और कहा कि यह मेरे वफादार हैं और हर ख़िलाफत के वफादार हैं। इसलिए, उन्होंने उनसे कहा कि यह खो गई है। बाहर खोजें वह अल्लाह तआला की कृपा से बाद में मिल गई थी। पिछले साल उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। फिर यह बहुत बीमार हो गए। दिल का दर्द पहले चल रहा था, इसलिए मैंने कहा कि यहां जलसा पर आ जाएं। पहले तो बड़ी चिन्ता थी कि शायद मैं सफर न कर सकूँ लेकिन बहरहाल फिर आ गए और यहाँ आ गए उनकी तबीयत बड़ी अच्छी हो गई। बड़े हशाश बशाश रहे और फिर मौसम जैसा भी हो दैनिक मुझे रात को मिलने भी आया करते थे और कभी उन्होंने मौसम की परवाह नहीं की। जितना समय यहां रहे हैं मुझे रोज़ाना मिलने रात को आया करते थे।

आदरणीया फूज़िया शमीम साहिबा सदर लजना लाहौर हज़रत नवाब अमतुल हफीज़ बेगम साहिबा की बेटी हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सबसे छोटी बेटी थीं। यह कहती हैं कि नाज़िर आला बनने के बाद उनके गुण स्पष्ट होकर सामने आए। बहुत अधिक विनम्र इंसान थे। मैंने कई बार आप को काम से फोन किया । अगर आप मीटिंग में होते तो आप दोबारा फोन करते थे। कई बार ऐसा हुआ कि मर्यम शादी फन्ड विवाह कोष के लिए अनुरोध किया गया और तुरंत मांग की गई। फोन करती और क्षमा करती और मजबूरी बताती और उस समय बहुत धैर्य से कहते कि अमीर साहिब से पैसे ले लो या ख़ुद प्रबंध कर लो रकम भिजवा दूंगा। बहुत सहानुभूति करने वाले थे। मैंने आपके जैसे किसी को कभी नहीं देखा है। एक बार एक जवान लड़की को परेशानी आ गई। बच्ची हाथों से बाहर हो रही थी किसी भी तरह से नहीं मान रही थी। मैंने आपको यह मामला भेजा है। आप ने बहुत सहानुभूति और प्यार से इसे संभाल (Handle) लिया और उन सामान्य दिनों में यह कादियान भी जा रहे थे। जलसा के अतिरिक्त दिन भी थे। मुझे बताया कि मैंने कादियान में जाकर विशेष रूप से इस बच्ची के लिए बैयतुद्दुआ में दुआ की है। कहती हैं कि अलहम्दो लिल्लाह वह बच्ची सीधे रास्ता पर आ गई। इस की शादी भी हो गई और जब शादी हुई तो, उसे बहुत सुंदर गहने का एक सेट भिजवाया। बाद में पूछते भी रहे। बहुत दयालु थे। यह कहते हैं कि जब भी मैंने आप से सलाह मांगी तो बहुत अच्छा मशवरा दिया। बहुत दुआ करने वाले थे अब ऐसा बुज़ुर्ग कहाँ मिलेगा? दिल बहुत नर्म था वह मुझे लिखती हैं कि अल्लाह तआला ख़िलाफत को इस का बदला प्रदान करे और अल्लाह तआला ख़ानदान में भी इन का स्थान लेने वाला बनाए।

चौधरी हमीदुल्लाह साहिब वकील आला तहरीक जदीद उनके बारे में लिखते हैं कि तालीमुल इस्लाम कॉलेज जब 1954 ई में लाहौर से रबवा स्थानांतरित हुआ तो जो अंग्रेज़ी पढ़ाने वाले ग़ैर अहमदी शिक्षक थे वह लाहौर में ही रह गए और रबवा नहीं आए। इसके बाद, श्री मियां खुर्शीद अहमद साहिब ने 1956 ई में अंग्रेज़ी विभाग को नए सिरे से आयोजन किया। आपकी स्वयं की अंग्रेज़ी बहुत अच्छी थी। हमें याद है कि कालेज के समय में आप के समय में अंग्रेज़ी की गुणवत्ता में बहुत सुधार हुआ है। फिर, चौधरी हमीदुल्लाह साहिब उनके बारे में लिखते हैं कि वह बहुत नर्म तबीयत के मालिक थे। क्षमा और माफ कर देना बहुत था। वह ग़रीबों की व्यक्तिगत स्थिति और एक जमाअत के अधिकारी के रूप में भी बहुत ध्यान रखा करते थे। फिर कहते हैं कॉलेज के ज़माने, जलसा सालाना, ख़ुद्दामुल अहमदिया, अंसारुल्लाह, कादियान के जलसों में व्यवस्था सभी मामलों में मेरे साथ बहुत सहयोग किया। लोगों के दुख तथा ख़ुशी में ज़रूर शरीक होते थे। लोगों को ग़म और ख़ुशी में ज़रूर् शरीक हुआ करते थे। शादी हो या वफात हो ज़रूर पहुंचा करते थे। एक बार जलसा सालाना के पुराने कार्यकर्ता फौत हो गए और मिया साहिब को पता न लगा जिस का बहुत अफसोस किया। नज़ारत उलिया के कारकुन तुफैल साहिब कहते हैं कि बहुत से गुणों के मालिक थे । उन्हें वर्णन करना तो संभव नहीं है आप बहुत रहम, प्यार करने वाले, दयालु और बहुत नर्म दिल, दुखी और परेशान लोगों के साथ बहुत सहानुभूति रखने वाले, सरल प्रकृति, लेकिन बहुत सम्मान रखने वाले व्यक्तित्व के मालिक थे। विनीत को कम से कम दस वर्ष, आप के नीचे काम करने और छाया में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ, और विनीत को याद नहीं है कि आपने किसी कारण से नाराज़गी या गुस्सा व्यक्त किया है अगर कोई गलती हुई, तो दया, शान्ति और प्यार से मार्गदर्शन करते थे।

फिर ख्वाजा मुज़फ्फर साहिब, जो नज़ारत उलिया में ही काम करते हैं वह कहते हैं कि आपने बहुत धैर्य से और बड़े सब्र से लम्बी बीमारी का मुकाबला किया। विनीत को आपको सानिध्य में लंबे समय तक सेवा करने का मौका मिला। आप बहुत दयालु, प्रेम करने वाले, दया करने वाले और मानव सेवा से उच्च स्थान पर थे। कई बार विनीत का अनुभव है कि जब एक जरूरतमंद महिला या एक आदमी आपसे मिलने आया आप राशन, टीवी, बिस्तर या वित्तीय सहायता की मंजूरी देते हैं। लेकिन कभी-कभी किसी ज़रूरत मन्द के जाने के बाद मुझे रोक कर हिदायत देते कि उन के घर जाकर उन के बारे में पता करो फिर मुझे बताओ और यह मुरब्बी कहते हैं कि जब दूसरे दिन मैं रिपोर्ट देता कि दिल कहता है कि यह अधिक ज़रूरत मन्द हैं और इतनी इस की सहायता नहीं की गई। तो यह नहीं कि केवल मांगने पर बल्कि अपनी तरफ से भी तहकीक़ करवाते थे ताकि उचित मदद की जा सके। वे लिखते हैं कि बहुत अधिक उपकार करने वाले, मिज़ाज के बर्दाशत करने वाले, सामंजस्यपूर्ण, विनीत, और ग़लतियों को माफ करने वाले थे। किसी शिकायत करने वाले की या शिकायतकर्ता आदमी की इच्छाओं की संतुष्टि न होने पर हमेशा प्यार से समझाते थे। देर तक बहुत ध्यान से बातें सुनते और ध्यान से बातें सुना हर जमाअत के उहदेदार का काम है अगर ध्यान से लागों की बातें सुनीं जाएं तो बहुत सी बातें लोगों की अपने आप ख़त्म हो जाती हैं। यह मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि एक बार एक व्यक्ति ने दफ्तर में खड़े खड़े अपनी बात की और व्याकुलता प्रदर्शन करते हुए गुस्से में पेश किए गए निवेदन को फाड़ कर फेंक दिया। आप ख़ामोश रहे शायद इस आदमी के लिए दुआ करते रहे। कहते हैं कि मैं वहां पास में ही खड़ा था। मुझे उस व्यक्ति का यह व्यवहार बुरा लगा तो कुछ कहने लगा परन्तु आप ने कोई बात नहीं की। उसे कुछ मत कहो। प्रत्येक का अपना अपना तरीका है कहते हैं कि आप की सहनशीलता और धैर्य देख कर ईष्शा होती थी कि कमज़ोर होने के बावजूद इतने मज़बूत हैं। फिर उनकी स्मृति भी प्रशंसा के योग्य थी। यह अद्भुत और यादगारी थी कहते हैं कि सोच बहुत उच्च थी। कहते हैं सैकड़ों ख़त और रिपोर्टों दैनिक निरीक्षण करते लेकिन बार बार ऐसा हुआ कि कोई मामला कई महीने पहले फाइल हो चुका होता और कई महीनों के बाद आवेदन प्रदाता दुआ या अधिक कार्रवाई के लिए पूछता तो कार्यकर्ता तो वह कंप्यूटर से तलाश कर रहे होते थे और उन को याद होता था कि क्या कार्रवाई हुई है या क्या निर्देशित किया गया है और कितने कागज़ात थे। कहां होंगे। मानो उनके दफ्तर की जो फाइलें थीं वह भी उन को याद रहती थीं और अपने मामले में पूरी दक्षता थी।

नाज़िम कज़ा राशिद जावेद साहिब कहते हैं कि एक बार एक मामले में पति जो हर हालत में सुलह चाहता था और लगभग सभी मामले हल हो गए लेकिन पत्नी की मांग थी कि यह राशि वापस कर जो मेरे से ली है। लेकिन पति की वित्तीय स्थिति बहुत कमजोर थी। नाज़िम कज़ा कहते हैं कि मैंने मौखिक जा कर मियां साहिब से बात की कि कुछ आप कर दें कुछ मैं कहीं से कर देता हूं। फिर मैं ने उन से कहा आप बड़े हैं सारी ही आप कर दें इस पर हंसने लगे कि इस तरह अगर सुलह होती है तो लिख कर भेज दो। अत: वह रकम अदा कर दी और कुछ ही मिनटों में उन की सुलह का मामला हो गया। फ़जल उमर फाउंडेशन के मुरब्बी रब्बानी साहिब है, वह कहते हैं कि विनीत की बहन, जिन्हें चमड़े की बीमारी थी। उन्हें सफाई के विचार से नए लंगर ख़ाना रहने की अनुमति मांगी। कुछ प्रशासनिक नियमों के कारण, मेरी बहनों को बताया गया था कि अलग से इजाज़त नाज़िर आला से मिल सकती है। वह कहती हैं कि हम बहुत घबराई हुई थीं कि जमाअत के प्रमुख इतने बड़े उहदेपर हैं किस प्रकार मिलें? हमें समय भी देंगे कि क्या नहीं? परन्तु बहरहाल हम गए। उन्होंने हमें दफतर बुलाया और शफीक (पिता) की तरह व्यवहार किया और तत्काल हमारी तकलीफ भी दूर कर दी। इसके अलावा अनुमति दी और इस वजह से, हमारी जमाअत की प्रणाली पर भरोसे में वृद्धि हुई।

अमीर ज़िला ख़ूशाब मुन्नवर मजूका साही लिखते हैं कि एक उच्च प्रशासक, बहुत शरीफ तथा लोगों को लाभ पहुंचाने वाली हस्ती थी। कर्तव्यों के अदा करने में बहुत छोटी छोटी चीजों का भी बहुत ध्यान रखते थे। गरीबों को ध्यान रखने वाले और निष्पक्षता से कर्तव्यों को अदा करने का बारे में कहते हैं कि मैं एक छूटा सी घटना वर्णन करता हूं जिसने मेरे दिमाग में एक अमिट छाप छोड़ी है। कहते हैं कि शायद 2015 ई के पहले की बात है मैं अपने दफ्तर में बैठा था कि दो ग़रीब महिलाएं

जिनका ज़िला ख़ूशाब से ही संबंध था मेरे पास आईं और कहा कि हमें मियां साहिब नाज़िर आला साहिब ने आपके पास भेजा है कि हमारे सहायता के लिए अनुरोध पर अमीर ज़िला की सिफारिश और हस्ताक्षर करें। कहते हैं मैंने इन महिलाओं से जब उनकी बात सुनी, साक्षात्कार लिया तो यह फैसला किया कि उनकी सहायता हम ज़िला स्तर पर कर देंगे बजाय केंद्र को भेजा जाए और इन दोनों को अपने ज़िला के सचिव अमूरे आमा विभाग के पास उन्हें भिजवा दिया और उन की सहायता भी हो गई कहते हैं कि दूसरे दिन विनम्र अपने दफ्तर में बैठा था कि मियां साहिब का सीधा फोन आ गया और मुझ से पूछा कि कल आप के ज़िला की दो ग़रीब औरतें हस्ताक्षर और सिफारिश के लिए भिजवाई थी वह आज दूसरे दिन भी मेरे पास राहत पाने के लिए वापस नहीं आईं और मैं परेशान हूं कि आपने उन्हें वापस न भिजवा दिया हो। इसलिए उन की सिफारिश कर के मेरे पास भिजवा दें ताकि उनकी सहायता समय पर हो सके। इस पर मैंने कहा कि चूंकि मैंने ज़िला के स्तर पर उन की मदद कर दी थी इस लिए आपके पास दोबार न भेजा। अमीर साहिब ने लिखा है कि इस छोटी सी घटना से आपका ग़रीबों का ध्यान रखना और मानव सेवा करना आप के व्यक्तित्व के लिए एक छोटी श्रद्धांजलि है।

यह इहसास है जो प्रत्येक उहदेदार में पैदा होना चाहिए कि किस प्रकार काम करना चाहिए। केवल यही नहीं कि काम के लिए भेज दिया बल्कि जो भी निवेदन आता है तो आवेदक ख़ुदा तो उस का फालो अप करता है परन्तु अधिकारियों को भी जब तक इस पर अनुकरण न होजाए और शिकायत दूर न हो जाए या जो मामला है वह तय हो जाए उस समय तक इस मामला को देखना चाहिए और कोशिश कर के हल करना चाहिए बजाए इस के कि सर से टाल दिया जाए। यदि प्रत्येक अधिकारी में यह आदत पैदा हो जाए जैसे मैंने पहले कहा था, तो हमारी कई समस्याओं का अंत हो सकता है।

हाफिज़ मुज़फ्फर अहमद साहिब लिखते हैं कि मैं गवाह हूं कि हज़रत मियां साहिब ने ख़िलाफत से प्यार और निष्ठा का सबूत देते हुए अपने ज़िम्मा दिए गए कार्यों को ऐसे अदा करके दिखाए कि जीवन की अंतिम सांस तक ख़लीफतुल मसीह की आज्ञाकारिता और वक्फ के वादा में कोई कमी न होना दी और अल्लाह तआला के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों के अदा करने में सारा जीवन व्यतीत कर दिया। यद्यपि आपके पास जमाअत की एक बड़ी पोस्ट थी, परन्तु बहुत विनम्र स्वभाव उच्च आचरण से जुड़ हुए और बहुत उसूल वाले इंसान थे।

इसी तरह हाफ़िज़ साहिब लिखते हैं कि नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने में आप एक सुन्दर नमूना थे। जब सदर अंसारुल्लाह बने तो प्रत्येक मीटिंग में बार बार नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने की तरफ ध्यान दिलाया करते थे बल्कि ख़ुद ही कहते थे कि तुम लोग कहो कि एक ही बात पर सूई अटकी हुई है परन्तु मैं क्या करू जब तक इस ज़िम्मेदारी का हक अदा नहीं होता मेरा फर्ज़ है कि कि मैं याद करवाता रहूँगा। और उहदेदारों को भी चाहिए कि जमाअत के साथ नमाज़ तो अलग रही कई नमाज़े भी छोड़ देते हैं।

इसी प्रकार गर्मी हो सा सर्दी निर्धारित समय पर दफतर जाना उम्र भर आप की आदत रही। नियमित पाबन्दी से आते और हमारे लिए एक उदाहरण थे।

इसी तरह उलिया के एक काम करने वाले क्लर्क मोहम्मद अनवर साहिब हैं। उन्होंने लिखा है कि आपकी दया-कृपा और प्रेम को भूलना बहुत मुश्किल है। कहते हैं कि बावजूद बुज़ुर्गी और बीमारी के समय पर दफ्तर में आते और कामों में संलग्न होते। अपनी वफात से पहले आख़री बार पहली जनवरी को दफतर आए तो सांस की तकलीफ अधिक थी। साँस लेने में बहुत कष्ट हो रहा था लेकिन बहुत ही धैर्य से अपने इस कष्ट को छिपाने की कोशिश कर रहे थे। वे कहते हैं कि उन्होंने मुझे बताया है कि आज मेरी सेहत अच्छी नहीं है, इसलिए मैं जल्द ही घर जाऊंगा पूरे समय दफ्तर में बैठ नहीं सकूंगा लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं जल्दी घर जाना है और काम नहीं करना। इस लिए इस क्लर्क को कहा कि जो भी हस्ताक्षर होने वाला ख़त है वह जल्दी ले आओ। तो यह कार्यकर्ता कहते हैं कि हिदायत के अनुसार मैं ने तुरन्त डाक पेश कर दी। कुछ वसीयत की फाइलों पर हस्ताक्षर करवाने के बाद अनुरोध किया गया है कि सेहत अच्छी नहीं है तो फिर बाकी बाद में साइन करवा लेगें लेकिन आपने कहा था कि नहीं सभी फाइलों पर साइन करवा लो। कुछ नहीं होता है इस के बाद आवश्यक निर्देश देने के बाद और कुछ नाज़िरों और अफसरों को मिल कर गए और इस तरह आप अपने कर्म से हमें समझा गए कि धर्म की सेवा किस प्रकार की जाती है और वक्फ की रूह कैसे होती है।

फिर एक सिलसिला के मुरब्बी मलिक मुहम्मद अफज़ल साहिब हैं कि चेहरा झुकाए मस्जिद में बैठना, रमज़ानुल मुबारक की बरकतों वाले महीने में, नियमित अस्र के बाद मस्जिद मुबारक में कुरआन करीम में डूब जाना, यदि कोई व्यक्ति आप के सामने अपना कोई मसला पेश करता तो इस मसला को ख़ुशी से सुनना और इस का हल बताना ये सारी बातें हैं जो रब्वा का प्रत्येक वासी दैनिक देखता था। कहते हैं कि जामिया का अध्ययन करते समय, एक बार फिर मैं बहुत चिंतित था और यह मामला मेरी समझ से बाहर था दुआ ही आख़री हल था। कहते हें मैं मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद साहिब की सेवा में उनके दफ्तर में गया था। बहुत अधिक व्यस्त होने के उन्होंने मुझे अपने कमरे में बुला लिया और जब मैं ने सारा मामला रखा तो मेरा उद्देश्य तो दुआ का था परन्तु उन्होंने सारी परेशानी को सुना और फिर ख़ुद ही सवाल पूछते रहे। और वह कहते हैं कि दफ्तर आने से पहले मुझे पता नहीं था कि मैं इतना समय ले लूँगा। परन्तु आप ने कमाल हद तक दया की और मुझे बहुत समय दिया। उसके बाद मैं आप के दफ्तर से बाहर आया हूं तो, दिल पर गुज़रने वाले बोझ को बहुत हल्का महसूस कर रहा था मैं एक नई आस लेकर कमरे से बाहर निकला। तो दूसरों को जो तसल्ली करवाना हैं ये उहदेदारों का फर्ज़ होना चाहिए है। यह लिखते हैं नर्म आदत वाले साक्षात दया फरिशतों की आदत वाले आदमी थे। कहते हैं कि एक दोस्त ने मुझे बताया कि जब मैं किशोर था, पहली बार मोटर बाइक सीख रहा था। मियां खुर्शीद अहमद अमीर स्थानीय घर के बाहर बाड़ में जा कर टकराया। उस समय संयोग से आप ख़ुद सड़क पर बाड़ लगा रहे थे, इसलिए मुझे डर लग रहा था और शर्म की बात मुझ से अलग थी। एक गलती, ऊपर से ड्राइविंग कम उमर में कर रहा था। फिर गिरा भी तो उनके सामने गिरा। यदि कोई भी अन्य व्यक्ति होता तो शायद डांटता क्योंकि बग़ीचे का नुकसान भी हुआ था। लेकिन आप की प्रकृति बहुत दयालु और दया वाली थी आप ने लपक कर मुझे उठाने में मदद की। फिर पूछा कि कहीं चोट आदि तो नहीं लगी। फिर प्यार से मुझे समझाया कि अपने जीवन की कद्र करो।

इसी तरह, मुरब्बी और वक्फे ज़िन्दगी के साथ बहुत प्यार और मुहब्बत करते थे। हालांकि ज्ञान व्यापक था, बहुत विनम्रता और नर्मी थी। वह अपने ज्ञान को व्यक्त करते थे जामिया अहमदिया की कक्षा शाहिद की जब पहली convocation हुई तो इस अवसर पर मैंने उन्हें प्रतिनिधि निर्धारित किया तो कहते हैं कि अपने भाषण में उन्होंने convocation में जामिया के लड़कों को कहा कि मैं तो सारी उम्र मुरब्बी साहिबान और उलेमा साहिबान के उपदेश सुनने का आदी हूँ मैं उनके सामने ज़बान कैसे खोल सकता हूं? लेकिन फिर नसीहत फ़रमाई और बहुत सारी बातों के अलावा उन्हें कहा कि विनीत का इतना ही निवेदन है कि बहुत आवश्यक और सख्त ज़रूरी और सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि जो उपदेश ख़लीफतुल मसीह फरमाते हैं उन्हें सुना जाए, उन पर विचार

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

किया जाए। हमारे लिए जहां तक संभव हो हमें, जमाअत के अधिकारियों को और आप लोगों जो मुरब्बी बन रहे हैं हो रहे हैं और कार्य कर सकते हैं उसका पालन करें। हम सब लोग इन हिदायतों को अपनी जान बना लें। और उन पर अनुकरण करने की पूरी कोशिश करे और यह भी दुआ करें कि अल्लाह तआला हमें इस की तौफीक प्रदान करे।

फिर बद्दूमल्ली के मुरब्बी सिलसिला मसूद साहिब हैं उन का कहना है कि मियां साहिब के साथ कई मुलाकातें हुईं। हर मुलाकात मुहब्बत और दया का एक समुद्र रखती है। आप सभी से प्यार करने वाले और सब के प्यारे थे। विनम्रता की एक मूर्ति थे। दफ्तर में मुलाकात करने आने वाले प्रत्येक आदमी से उठ कर मिलते थे। और हाथ मिलाते चाहे वह छोटा बच्चा ही क्यों न हो। जो कोई भी आपको मिलने आता आप अपने आवश्यक कार्य को छोड़कर उस की बात को बहुत ध्यान से सुनते और उस में घुल मिल जाते। यही कारण है कि हर कोई आपके पास फरियाद लेकर आता। यह हर एक ने इसी प्रकार लिखा है। आपके दफ्तर के ग़रीब अमीर, अधिकारी या सामान्य अहमदी प्रत्येक के साथ समान रूप से व्यवहार किया जाता था। हर किसी की बात पर शीघ्र त्वरित प्रतिक्रिया दिखाते जैसे वे व्यक्ति बहुत महत्त्वपूर्ण है।

डॉ नूरी साहिब लिखते हैं कि आप लोगों की भावनाओं और ज़रूरतों का दूसरों से अधिक ध्यान रखते थे। डॉ साहिब कहते हैं कि मुझे याद है कि एक बार एक व्यक्ति को एंजियो प्लास्सी के लिए अधा कीमत की रियायत दी गई थी। बाद में जब उस ने आप से सम्पर्क किया तो उन्होंने पूरी कीमत ही माफ कर दी। और डॉ नूरी साहिब कहते हैं कि मुझे कहने लगे कि समय के ख़लीफा ने मुझे हिदायत दी है कि सभी ज़रूरत मन्द मरीज़ों की सहायता की जाए इसलिए इस को निभाना हमारा कर्तव्य है। और फिर कहते हैं कि जब अस्पताल में इलाज करवा रहे थे। तो नर्सों के लिए जो प्रशिक्षण ले रही हैं या पुरुष ले रहे हैं। उनके लिए उन्होंने मुझे कहा कि मेरे बेटे से इस के लिए पैसे ले लें और इन सब को मेरी तरफ से स्वेटर का उपहार खरीद कर दें। दूसरों की मेहनत को बहुत सराहते। डॉक्टर साहिब कहते हैं कि एक दिन मुझे उन्होंने लिखा था कि कुछ भावनाएं और जज़बे इस प्रकार के होते हैं कि उनको चेहरे के सामने व्यक्त करना बहुत असंभव है। कहती हैं कि यही अवस्था मेरी भी तुम लोगों से अलग होते समय थी। अल्लाह तआला तुम्हें इस का अच्छा पुरस्कार दे।

फिर कहते हैं कि ख़िलफत के साथ उन्हें बहुत प्यार और प्रेम था। ताहिर हार्ट के साथ एक विशेष संबंध था। डॉ नूरी साहिब लिखते हैं कि एक बार मुझे कहा कि ताहिर हार्ट समय के ख़लीफा का एक बच्चा है अल्लाह तआला समय के ख़लीफा की इस इच्छा को पूरा करे और यह संस्था वास्तव में दारुल शिफा का नमूना बने और फिर उन्होंने नूरी साहिब को कहा कि मैं तो दैनिक दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला समय के ख़लीफा की सभी इच्छाओं को उसके पक्ष में पूरी करे। कहते हैं कि बीमारियों के दिनों में जब मैं एक रिपोर्ट लिख देता था। नूरी साहिब इनकी रिपोर्ट रोज़ मुझे भिजवाया करते थे। तो कहते हैं कि एक दिन मेरा हाथ पकड़कर भावनात्मक रूप से कहने लगे कि हमारे पास हुज़ूर के सेवा में बीमारी और दर्द को छोड़कर पेश करने के लिए कोई अच्छी ख़बर नहीं है।

इसी तरह को कई अन्य लोगों के ख़त हैं आपके गुणों का वर्णन किया गया है और हर व्यक्ति ने नम्रता और सहानुभूति के बारे में लिखा है। ख़िलफत के साथ किस तरह का प्यार और प्रेम है इस का प्रकटन मेरी पत्नी के सामने एक बार इस प्रकार किया है कि मेरी पत्नी ने उन्हें बताया कि आप समय के ख़लीफा के तो दुआ करते होंगे, मेरे लिए और बच्चों के लिए भी दुआ करें। तो कहने लगे कि समय के ख़लीफा के लिए विशिष्ट सज्दों में उन के बीवी बच्चों के लिए भी दुआ करता हूं। और उस समय जब वह कह रहे थे उनकी बड़ी भावनात्मक अवस्था थी। अमीर और ऊपरी अधिकारियों के लिए आज्ञाकारिता की गुणवत्ता बहुत अधिक थी। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे की बीमारी के दिनों में मैं और आदरणीया मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब वर्ष 2000 ई में यहां लंदन आए हुए थे। मैं उन दिनों में नाज़िर आला था किसी बात पर मेरा और उन का थोड़ा मतभेद हुआ जिस पर उन्होंने थोड़ा सख्ती से मेरी बात को रद्द कर दिया। ख़ैर बात आई गई हो गई। मैं उन से कुछ दिन पहले लंदन से रब्वा चला गया। और यह कुछ दिन बाद आए और मेरे दफ्तर में आए और बहुत गंभीरता से बैठ गया। फिर उन्होंने कहा, मैं माफी माँगने आया हूँ। मैंने एक बड़ी ग़लती की है मुझे याद नहीं था कि मैंने क्या गलती की थी। कहने लगे लंदन में मैं ने जो मतभेद किया था इसमें मेरी आवाज़ में थोड़ा क्रोध भी शामिल हो गया था और यह जो बात है अमीर के सम्मान के विरोध में है इसलिए मैं माफी चाहता हूं और क्षमा चाहता हूं। बावजूद मेरे कहने के कि कोई बात नहीं क्षमा ही मांगते रहे। यह तो उनकी विनम्रता और अमीर का आदर सम्मानित था। फिर सुधार के जो पहलु हैं इन को अपने घर से शुरू करते थे। यह नहीं कि दूसरों का सुधार किया और अपने बच्चों के नहीं देखना। कुठ साल हुए कि मैंने ख़ानदान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के परिवार के लोगों को एक पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारियों का इहसास दिलाया था। कुछ शिकायतें जो मुझ तक पहुंची थीं उन को दूर करने की याददहानी थी। यह ख़त जब मैंने पाकिस्तान भेजी तो पाकिस्तान में उन्हें कहा था कि परिवार के जो लाग वहां जमा हैं उन्हें इकट्ठा कर के मेरा यह ख़त पढ़ दें। जब वह ख़त उन्होंने परिवार के सामने पढ़ा तो उन्होंने बहुत ही भावनात्मक तरीके से कहा था कि मुझे यह स्पष्ट करना चाहिए कि मेरे बच्चे भी इन चीज़ों से पाक नहीं हैं जिन की पहचान की गई है और मैं उन को भी और उन की औलाद को भी नसीहत करता हूं कि यह कमज़ोरी हमें दूर करनी चाहिए और समय के ख़लीफा तो हम से आशा रखते हैं उस पर पूरा उतरने की कोशिश करनी चाहिए।

तो यह उनकी सच्चाई और तक्वा की गुणवत्ता थी अल्लाह तआला उन की औलादों को उन को नेकियों को स्थापित रखने की तौफीक़ प्रदान करे। अल्लाह तआला जमाअत को और अहमदीया ख़िलाफत को ईमानदार एक मुख़लिस और तक्वा पर चलने वाला सहायक प्रदान फरमाए।

आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा अनस अहमद साहिब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस के सब से बड़े बेटे हैं उन्होंने उन के बारे में मुझे जो लिखा है इस में वह लिखते हैं कि भाई ख़ुर्शीद सारी ज़िन्दगी ख़िलाफत के कदमों में बैठ कर अन्तिम समय तक सिलसिला की सेवा करते रहे। अल्लाह तआला उन के स्तर ऊंचा और उन की सेवाओं को स्वीकार करे और बेशुमार फज़लों और रहमतों के साया में रखे। उन्होंने तो अपना हक पूरा कर लिया है। यह उन्होंने बिलकुल सहीह लिखा था। निश्चित रूप से उन्होंने अपना हक पूरा कर दिया अल्लाह तआला हम सब को अपने हक पूरा करने और निभाने की तौफीक प्रदान फरमाए।

नमाज़ के बाद, मैं उनकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। इन्शा अल्लाह।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

हूं और आपका स्वागत करता हूं। जो प्रेम का सन्देश इस पवित्र धरती से चल रहा है वह एक महान बात है। आप सभी बहुत भाग्यशाली हैं जो इस जमाअत का हिस्सा हैं।

(9) श्री संत बाबा संतोक सिंह साहिब (हेड कार सेवा पंजाब) आपकी जमाअत मुझे बहुत प्यार करती है बहुत सम्मानित करती है आप सब को सलाम और इस जलसा की मुबारकबाद। विभाजन से पहले, पंजाब में, सभी बहुत प्यार और मुहब्बत से मिल जुल कर रहते थे। लेकिन वह जो त्रासदी हुई उस के कारण, कई निर्दोष लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। मेरी दिली इच्चा है कि हम सब पहले की तरह एक जुट हो कर रहें।

31 दिसंबर 2017 इतवार

(तीसरा दिन -पहला इजलास)

तीसरे दिन के पहले सत्र की कार्रवाई आदरणीय मुनीर अहमद साहिब हाफिज़ आबादी वकील आला तहरीक जदीद कादियान की अध्यक्षता में शुरू हुआ। आदरणीय हाफिज़ नकीबुल अमीन साहिब कादियान ने सूरत इस्राईल आयत 79 से 85 की तिलावत की। जिनका उर्दू अनुवाद आदरणीय मकसूद अहमद भट्टी साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला ने तफसीर सग़ीर सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि से प्रस्तुत किया। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मन्ज़ूम कलाम

जमालो हसने कुरआं नूरे जाने हर मुसलमां है
कमर है चांद औरों का हमारा चांद कुरआं है।

आदरणीय मुमताज़ अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला पाकिस्तान ने अच्छी आवाज़ में पढ़ा।

इस सत्र की पहली तक़रीर आदरणीय मौलाना मुहम्मद नूरुद्दीन नासिर साहिब उस्ताद जामिया अहमदिया कादियान ने "ख़ुला और तलाक के संदर्भ से इस्लाम में महिलाओं के अधिकार" के शीर्षक पर की। अपने तक़रीर की शुरुआत कहा था कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भव से पहले महिलाओं की स्थिति बहुत नाज़ुक थी। उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं था। उनके जन्म को चिंता का कारण समझा जाता था। कुरआन मजीद ने इस भयावह दृश्य का नक्शा इस प्रकार खींचा है:

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِالۡاُنۡثٰی ظَلَّ وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّ هُوَ كَظِيۡمٌ ﴿۵۹﴾ يَتَوَارٰی مِنَ الۡقَوۡمِ مِنۡ سُوۡٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمۡسِكُهٗ عَلٰی هُوۡنٍ اَمۡ يَدُسُّهٗ فِی التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحۡكُمُوۡنَ

(सूरत अन्नहल 59 से 60) और जब उन में से किसी को बेटी के पैदा होने की ख़बर मिलती है तो उस का चेहरा ग़म के कारण काला हो जाता है और उस के दिल को देखो तो वह दुखी होता है और उस की ख़बर के कारण वह लोगों से छिपता फिरता है और योचता है कि मानो अपमान सहन कर के लड़की को जीवित रहने दे या ज़मीन में दफन कर दे।

हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा ने अपने मंज़ूम कलाम में इस अवस्था का क्या सुन्दर नक्शा खींचा है

रख पेश बहन वह वक्त बहन जब ज़िन्दा गाड़ी जाती थी
घर की दीवारें रोती थीं जब दुनिया में तू आती थी।

लेकिन महिलाओं का सौभाग्य था कि इन को अधिकारों का दिलवाने वाला एक महान उपकारक पैदा हुआ। वह हमारे सैयद व मौला रहमतुन्न लिल्आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। आप के द्वारा इन सब ज़ुल्मों को एक दम मिचा दिया गया। आप ने फैसला फरमाया कि ख़ुदा तआला ने मुझे औरत के सम्मान की रक्षा के लिए पैदा किया है। मैं ख़ुदा थाला की तरफ से घोषणा करता हूं कि कि मर्द तथा औरत इंसान होने की दृष्टि से बराबर हैं। आप ने फरमाया कि औरत बेहतरीन दुनिया की दौलत है वह औरत के लिए लिबास का समान है। मर्द का सम्मान तथा इज़्ज़त इस बात पर आधारित होगी कि वह अपनी बीवी के साथ अच्छा व्यवहार करने वाला होगा तो मोमिन कहलाएगा और औरत के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करेगा तो ख़ुदा तआला के निकट अज़ाब का भागीदारी होगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि महिला अपने माल और अपने पति और आपने माता-पिता की संपत्ति की उत्तराधिकार होगी। इस की शादी निसन्देह एक शुद्ध और पवित्र सन्धि है। इस का तोड़ना बहुत बुरा है तथा बहुत कष्ट की अवस्था में है लेकिन ऐसा नहीं है कि अगर महिलाओं और पुरुषों की प्रकृति के बीच एक बहुत बड़ा अंतर है, उन्हें इस के बावजूद एक साथ रहने के लिए मजबूर किया जाए कि वह इस वादा के लिए अपनी उम्रों को बरबाद कर लें और अपने जन्म के उद्देश्य खो दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: औरत के अधिकार की जैसी इस्लाम ने रक्षा की है वैसी किसी और धर्म ने हरगिज़ नहीं की। संक्षिप्त शब्दों में फरमा दिया है وَ لَهُنَّ مِثۡلُ الَّذِیۡ عَلَيۡهِنَّ (अल-बक़रा: 229) कि जैसे पुरुषों के महिलाओं पर अधिकार हैं वैसे ही महिलाओं के पुरुषों पर हैं कुछ लोगों का हाल सुना जाता है कि इन बे-चारियों को पैरों की जूती की तरह जानते हैं और अपमानित सेवाएं उन्हीं से ले जाती हैं। गालियां देते हैं। और पर्दे के आदेश इस प्रकार नाजायज़ तरीके से बरतते हैं कि उन को ज़िन्दा गाड़ देते हैं।

चाहिए कि पत्नियों से पति का ऐसा सम्बन्ध हो जैसे कि दो सच्चे और वास्तविक दोस्तों का होता है इंसान के उच्च चरित्र और ख़ुदा तआला से संबंध की पहली गवाह तो यही महिलाएं होती हैं अगर उन्हीं से उन के सम्बन्ध अच्छे नहीं तो फिर किस प्रकार सम्भव है कि ख़ुदा तआला से सुलह हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया خَيۡرُكُمۡ خَيۡرُكُمۡ لِاَهۡلِهٖ तुम में से अच्छा वह है जो अपने घर वालों के लिए अच्छा है।

दूसरी तक़रीर आदरणीय शोएब अहमद साहिब नाज़िर बैयतुल माल खर्च कादियान ने 'वित्तीय कुरबानी का महत्त्व और उसकी बरकतें ईमान वर्धक घटनाओं के आलोक में के शीर्षक पर की। आप ने तक़रीर के शुरू में सूरह: अलबक़रा: की आयत 262 और 266 की तिलावत की जिन में अल्लाह तआला फरमाता है: उन लोगों का उदाहरण जो अपने माल अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करते हैं ऐसे बीज की तरह है जो सात बालें उगाता हो हर बाली में सौ दाने हूँ, और अल्लाह तआला जिसे चाहे (इस से भी)बहुत बढ़ा कर देता है और अल्लाह बहुत बढ़ाने वाला और स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

और उन लोगों के उदाहरण जो अपने मालों को अल्लाह तआला की ख़ुशी चाहते हुए और अपने नफ़्स में से कुछ को मज़बूत करने के लिए खर्च करते हैं ऐसे बाग़ की सी है जो ऊंचे स्थान पर स्थित हो और उसे भारी बारिश पहुंचे तो वह बढ़चढ़ कर अपना फल लाए और अगर उसे तेज़ बारिश न पहुंचे तो शबनम ही बहुत है और अल्लाह इस पर जो तुम करते हो बहुत गहरी नज़र रखने वाला है।

आप ने सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा की वित्तीय बलिदान के बहुत विश्वास अफ़रोज़ घटनाएं सुनाईं। सहाबा हज़रत मसीह मौऊद वित्तीय बलिदान की कुछ घटनाएं पाठकों के ईमान वृद्धि के लिए नीचे प्रस्तुत किए जाते हैं ।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो की एक रिवायत है कि एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लुधियाना में एक आवश्यक विज्ञापन के छपवाने के लिए 60 रुपये की ज़रूरत पेश आई। उन दिनों आपके साथी हज़रत मुंशी जफर अहमद साहिब लुधियाना आए हुए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको बुलाया और कहा कि यह महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है, क्या आपकी जमाअत इतनी रकम का प्रबंध करने में सक्षम कर सकेगी। आप ने कहा इन्शा अल्लाह कर सकेगी। मैं जाकर रुपए लाता हूं अत: आप शीघ्र कपूर थला गए और जमाअत के किसी आदमी से वर्णन किए बिना अपनी बीवी के ज़ेवर बेच दिया और साथ रुपए जमा किए और हज़रत साहिब की सेवा में लाकर पेश कर दिया.

यह रिवायत लंबी है क्योंकि मुंशी ज़फर अहमद साहिब ने अकेले की और जमाअत कपूरथला के दोस्तों को तहरीक में शामिल नहीं किया इसलिए इस घटना की जानकारी होने पर मुंशी अरोड़ा खान साहिब कि इसी जमाअत के सदस्य थे छह महीने तक मुंशी ज़फर अहमद साहिब से नाराज़ रहे ये वह फिदाई ते जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को प्रदान हुए थे।

हज़रत अम्मा जान सय्यदना नुसरत जहां बेगम साहिबा से संबंधित आता कि आप ने मिनारतुल मसीह के निर्माण के लिए हज़ार रुपए का वादा लिखवाया और अपना दिल्ली का एक मकान बेचकर यह रकम अदा की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब मिनारतुल मसीह के निर्माण की तहरीक फ़रमाई तो हज़रत मियां शादी खान साहिब सियालकोटी ने चारपाइयों के सिवा अपने घर का सारा सामान तीन सौ रुपये में बेचकर पूरी राशि हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सेवा में पेश कर दी। इसका पर हज़रत अक़दस ने आपको हज़रत अबू बकर का उदाहरण दिखाने में ख़ुशी ज़ाहिर की। यह सुनते ही आप घर वापस गए और चारपाइयां भी बेच कर अल्लाह की राह में कुरबान कर दी।

इसी तरह हज़रत साहिबज़ादा पीर मंज़ूर अहमद साहिब के बारे में हज़रत मिर्ज़ा अब्दुल हक़ साहिब वकील लिखते हैं कि हज़रत साहिबज़ादा पीर मंज़ूर अहमद साहिब यस्सरनल कुरआन के आविष्कारक थे इस कायदा को बहुत लोकप्रियता

हासिल हुई। सैकड़ों रुपये माहवार उस ज़माने में आप की आय होती थी लेकिन आप का धर्म की कुरबानी का यह हाल था कि केवल 30 रुपए माहवार अपने खर्च के लिए रखते और बाकी सब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो को सेवा में कुरआन के प्रकाशन और धर्म के प्रकाशन में दे देते थे। 1940 ई के बाद, जब गिरावट शुरू हुई तो मासिक 40 रुपए की राशि रखनी शुरू कर दी और एक साल में दस हज़ार रुपए इस्लाम की सेवा में दिए।

आप ने फ़रमाया बेहद नाज़ुक और कठिन परिस्थितियों में, दिली भावनाओं को त्याग करते हुए, राहे ख़ुदा में कुरबानी करना कोई मामूली बात नहीं। इसके अनगिनत नमूने तारीख़े अहमदियत में कई स्थानों पर जगमगाते दिखते हैं। हज़रत काज़ी मुहम्मद यूसुफ साहिब पेशावरी ने हज़रत मसीह मौऊद के ज़माने की एक घटना यूं बयान की कि वज़ीराबाद के शेख परिवार का एक युवा मर गया। इसके पिता ने कफन के लिए 200 रुपये रखे हुए थे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लंगर ख़ाना के खर्च के लिए तहरीक फरमाए उन को भी ख़त गया तो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में ख़त भिजवाने के बाद लिखा मेरी नौजवान लड़का ताऊन से फौत हुआ है इस के कफन दफन के लिए 200 रुपए रखे थे जो आप की सेवा में भेजता हूं और लड़के को उसके लिबास में में दफन करता हूँ।

इस सत्र की तीसरी तक़रीर आदरणीय मौलाना रफीक़ अहमद बैग साहिब उप नाज़िर अमूरे आम्मा ने नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना हज़रत अमीरूल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला के बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के निर्देश के आलोक में के शीर्षक पर की। आप ने कुरआन और हदीस तथा सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के उपदेशों के आलोक में नमाज़ का महत्त्व और बरकत को स्पष्ट किया। इस मामले में, आपने हुज़ूर अनवर के कुछ उपदेश प्रस्तुत किए। हुज़ूर कहते हैं: पहले नमाज़ की आदत ज़रूरी है। अपने आप को नमाज़ों का पाबन्द करना चाहिए। चाहे नमाज़ों का लाभ व्यक्ति को ज़हरी हालत में नज़र आता है या नहीं लेकिन नमाज़ें बहरहाल पढ़नी हैं क्योंकि यह फर्ज़ हैं और यह समझकर आदत डालना आवश्यक है कि मैंने हर हालत में अल्लाह तआला की तरफ ही लौटना है और उसके पास ही जाना है। हर जरूरत के लिए उसी से माँगना है। यह स्थिरता अगर रहेगी तो फिर एक समय आएगा कि नमाज़ के अधिकार भी अदा होने शुरू हो जाएंगे और नमाज़ों में भी मज़ा आएगा। और फिर कुठ लोग जिस प्रकार पूछने पर जबाव देते हैं उन का यह जवाब नहीं होगा। कि मैं कोशिश करता हूं कि नमाज पढ़ूं मगर सुस्ती हो जाती है। आपने एक अन्य अवसर पर फ़रमाया की सुस्ती होती ही उस समय है जब नमाज़ का महत्त्व नहीं होता और अल्लाह के अतिरिक्त इंसान किसी और को अधिक महत्त्वपूर्ण समझ रहा होता है यदि अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास हो तो कैसे हो सकता है कि सुस्ती हो । अत: आज दुनिया के जो हालात हो रहे हैं उनका के बुरे प्रभाव से अपने आप को और अपनी नस्लों को बचाने के लिए अल्लाह तआला की तरफ पवित्र होकर झुकने की ज़रूरत है और इस झुकने का सब से अच्छा माध्यम अल्लाह तआला और उसके रसूल और इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यही बताया है कि हम अपनी नमाज़ों की अदायगी और सुरक्षा पर ध्यान दें ।

साथ ही फरमाया:

नमाज़ों की सुरक्षा और निगरानी ही इस बात की गारंटी होगी कि हमें और हमारे नस्लों को पापों और ग़लत कामों से मुक्त रखे है। हमारी नमाज़ों में नियमित होना बेशक हमारे बच्चों में भी यह भावना पैदा करेगी कि हम ने भी नमाज़ों में नियमित होना है। इसी तरह उस की रक्षा करनी है जिस तरह हमारे माता-पिता करते हैं और जब यह बात बच्चों के मन में सुदृढ़ हो जाएगी, बैठे जाएगी कि हम ने नमाज़ में बाकायदगी करनी है तो माता-पिता को यह बात इस चिंता से भी मुक्त कर देगी कि पश्चिमी समाज में जहाँ हज़ार प्रकार के खुले गंद और बुराईयां हर तरफ फैली हुई हैं, हर समय माता-पिता को यह फिक्र रहती है कि उनके बच्चे इस गंद में कहीं गिर न जाएं। वे दुआ के लिए लिखते हैं, वे कहते हैं और ख़ुद प्रयास भी करते होंगे दुआ भी करते होंगे। अगर अपने बच्चों को इन गंदगियों और बुराइयों में गिरने से बचाना है, तो सबसे बड़ा कोशिश यही है कि नियमित नमाज़ों में उन्हें पाबन्द करें । जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है कि اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنۡہٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡکَرِ (अन्कबूत: 46) अर्थात बेशक नमाज़ बुराइयों और अवांछित बातों से रोकती है। मानो उनकी नमाज़ की रक्षा के कारण अल्लाह तआला ने भी उन नमाज़ों के माध्यम से ज़मानत दे दी है कि शुद्ध होकर मेरे पास आने वाले अब मेरी जिम्मेदारी बन गए हैं कि मैं भी इस दुनिया की गंदगियों और बुराइयों से उनकी रक्षा करूं और उन्हें अच्छे कर्मों पर रखूं, तक्वा पर स्थापित रखूं। ऐसे लोगों में शामिल करूं जिस पर मेरे पवित्र लोग हैं अत: यह सब से मुख्य बात है जिस का प्रशिक्षण और जिसे करने का इरादा आप ने इस जलसा के दिनों में करना है। जो नमाज़ों में कमज़ोर हैं उन्होंने इन दिनों में इस का हक अदा करते हुए इस बात में नियमित और पाबन्द होने की कोशिश करनी है।

इस के बाद सीरिया से आने वाले एक सम्मान्नीय मेहमान आदरणीय अब्दुल अल्फरज अलहस्नी साहिब ने परिचयात्मक तक़रीर की। महोदय जो सीरयिा से जलसा सालाना कादियान पर तशरीफ़ लाए थे, और एक पुराने अहमदी हैं, ने अपने विचार अरबी भाषा में व्यक्त किए जिस का अनुवाद आदरणीय अताउल मुजाब लोन साहिब नाज़िर नश्रो इशाअत कादियान ने श्रोताओं को सुनाया। आदरणीय अब्दुल अल्फरज अलहस्नी साहिब ने कहा हम सीरिया के देश से पूरी दुनिया के लिए यह गवाही लेकर आए हैं कि अल्लाह तआला और उसके रसूल ने सच कहा था وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ ؕ وَہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ अर्थात आख़रीन में से एक जमाअत होगी जो मसीह पर ईमान लाने वाली और नेक करेम करने वाली और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में शामिल होने वाली है। और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह खबर दी थी कि यह मसीह दमिश्क के मशरिक में एक सफेद मीनारे के पास अतरेगा। इसलिए, दमिश्क के पूर्व में एक से अधिक मिनारे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस हदीस की प्रामाणिकता का प्रमाण बन गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मौऊद बेटे सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह का दमिश्क में आना इस हदीस का पहला मिनारा था। इस के बाद आप के आदेश से मौलाना जलालुद्दीन श्म्श मुबल्लिग़ के रूप में पधारे। आप भी एक मिनार थे जिन के द्वारा सारिया में बहुत से लोगों को हिदायत प्राप्त हुई। इन अहमदियत स्वीकार करने वालों में एक आदमी ऐसा भी था जिस को शाम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की तब्लीग़ फैलाने और लोगों को जमा करने और लोगों को मज़बूत बुनियादों पर स्थापित रखने की बहुत अधिक तौफीक मिली।. यह आदमी मुनीर अल्हस्नी साहिब थे। आज हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की बस्ती कादियान से बल्कि इस प्रकार कहना चाहिए कि कादियान में स्थापित सफेद मिनार से अपनी क़ौम बल्कि सारी दुनिया को सम्बोधित कर के कहते हैं कि कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की वह्यी یُصَلُّوۡنَ عَلَیۡکَ صُلَحَاءُ الۡعَرَبِ وَاَبۡدَالُ الشَّامِ कि अरब के नेक और सारिया के अब्दाल तुझ पर सलामती भेजते हैं सच्ची थी। और आप की सदाकत की सच्ची दलील थी। मेरी दुआ है कि अरब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस दूसरी बेअसत के ज़माना में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सेवक हज़रत अहमद अलैहिस्सालम के सहायक तथा मददगार हों। मैं अपनी निवेदन इस वसीयत पर समाप्त करता हूं जो दमिश्क के अहमदी भाइयों ने आते समयुंझे की थी कि कि उन के लिए इस मुबारक इज्तिमा से दुआ का निवेदन करूं।

तीसरा दिन -अन्तिम इजलास

जलसा सालाना कादियान के समापन सत्र की कार्यवाही आदरणीय शीराज़ अहमद साहिब एडिशनल नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया दक्षिण हिन्द की सदारत में शुरू हुआ। आदरणीय हाफिज़ मुहम्मद फारूक आज़म साहिब ने सूरत हामीम सिज्दा की आयत 31 से 36 तिलावत की जिस का उर्दू अनुवाद आदरणीय सय्यद कलीमुद्दीन अहमद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला ने तफसीर सग़ीर सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि से प्रस्तुत किया। आदरणीय ख़ालिद वलीद अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंज़ूम कलाम

वह पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उसका है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है

अच्छी आवाज़ में पढ़ा।

इस के बाद आदरणीय मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया कादियान ने विभिन्न अधिकारियों, विभिन्न सरकारी संस्थाओं का धन्यवाद किया जिन्होंने जलसा के आयोजन में किसी प्रकार से सहयोग किया था। सबसे पहले आप ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया जिस के फज़ल तथा इहसान से जलसा हर लिहाज़ से समाप्न को पहुंचा। इसी तरह आप ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का भी धन्यवाद कि हुज़ूर अनवर के निरन्तर पथ प्रदर्शन हमारे साथ रहा। बाद में, कई केंद्रीय तथा प्रान्तीय विभागों और उनके अधिकारियों की मदद के लिए धन्यवाद किया। इस के बाद इज्लास के सदर ने स्थानीय रूप से दुआ करवाई।

इसके बाद, स्टेज पर जलसा गाह में शामिल लोग अपने अपने स्थल पर बैठे रहे। ताकि वे एम टी के माध्यम से जलसा सालाना कादियान के लिए लाइव प्रासरित होने वाले प्रोग्राम को सुन सकें। ख़िताब के समय पूरा जलसा गाह लोगों से भरा हुआ था। लंदन से जलसा के लाइव प्रसारण से पहले मुस्लिम टेलीविजन अहमदिया इंटरनेशनल से कादियान और पवित्र स्थानों पर आधारित बहुत ही सुन्दर डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। इस में दारुल मसीह, मस्जिद मुबारक, मस्जिदे अक्सा और मिनारतुल मसीह का रोशनी से नहाया हुआ बहुत ही सुन्दर दृश्य दिखाए गए तथा उनके स्थान के महत्व तथा बरकतों पर बहुत अच्छे ढंग से प्रकाश डाला गया। इसके इलावा बहश्ती मकबरा और मज़ार मुबारक सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ज़हूर कुदरते सानिया के भी बेहद खूबसूरत दृश्य दिखाए गए और उनके विषय में बताया गया। डाक्योमनटरी के अंत में जलसा की कुल कार्रवाई की छोटी झलकियाँ दिखाई गईं और कादियान दारुल अमान में जलसा के दिनों के दिनों ख़ूबसूरत दृश्य दिखाए गए।

इसके बाद एम टी ए का लाइव प्रोग्राम शुरु हुआ। हुज़ूर अनवर बैयतुल फुतूह मस्जिद में रौनक अफरोज़ हुए। लंदन में भी पांच हज़ार से अधिक सुनने वाले हुज़ूर अनवर के ख़िताब की प्रतीक्षा में हाज़िर थे।

कुरआन करीम की तिलावत आदरणीया अब्दुल मोमिन ताहिर ने की आप ने सूरत अल-इमरान की आयत 103 से 108 की तिलावत की और अनुवाद किया। बाद ही आदरणीय सय्यद आशिक हुसैन साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पाकीज़ा फ़ारसी मंज़ूम कलाम

जानो दिलम फिदाए जमाले मुहम्मदहस्त
ख़ाकम निसारे कूचा आले मुहम्मदस्त

सुन्दर आवाज़ में पढ़ा ।इसके बाद सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का पवित्र मंज़ूम उर्दू कलाम

हर तरफ फिक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीं देने मुहम्मद सा न पाया हम ने।

हुज़ूर अनवर के तक़रीर के लिए जलवा अफ़रोज़ होते ही जलसा गाह कादियान का परिवेश नारा तकबीर अल्लाहो अकबर की गगन चुंबी आवाज़ों से गूंज उठा। तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरत फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया:

जमाअत के विरोधी आरोप लगाते हैं और आज कल यह आरोप तीव्रता से लगाया जा रहा है, जो उनके विचार में जमाअत अहमदिया को इस्लाम से हटा रहा है कि नाऊज़ बिल्लाह जमाअत अहमदिया अकीदा ख़त्मे नबुब्त का इंकार करती है। यह बहुत बड़ा झूठ है। यह एक ऐसा आरोप है जिससे जमाअत का दूर का भी सम्बन्ध नहीं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने हमें बताया है कि जो आदमी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानता वह काफिर और इस्लाम से बाहर है। यह अत्यंत क्रूर और जाहिलाना आरोप है जो कि जमाअत अहमदिया पर लगाया जाता है। एक तरफ हम अपने को मुसलमान कहें और दूसरी तरफ संस्थापक जमाअत अहमदिया के अपने शब्दों के अनुसार ख़त्मे नबुव्वत के अकीदा को न मान कर काफिर बन जाएं यह कैसे हो सकता है? लेकिन मुसलमानों को आतंकित किया जाता है जिसकी वजह से वे सोचने समझने और सुनने के लिए तैयार ही नहीं होते। जो विचार करते हैं और बात सुनते हैं वे इस बात के लिए राज़ी हो जाते हैं कि वास्तव में अहमदी मुसलमान ही वास्तविक मुसलमान हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक महदी मौऊद को मान कर हमें नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्तविक स्थान की पहचान हो सकती है। भारतीय महाद्वीप के तथाकथित उलमा अपने निजी हितों को प्राप्त करने और अज्ञानता को छिपाने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं कि जिस तरह भी हो सके मुसलमानों को अहमदियों के पास भी न आने दिया जाए यही काम इस दुनिया के दूसरे देशों में भी कर रहे हैं और लोगों को लालच देते हैं। लेकिन वे मुसलमान जिन्हें पहले इस्लाम का पता नहीं था और उन्होंने अहमदियत के द्वारा वास्तविक इस्लाम सीखा, वे ही अब उन्हें जवाब दे रहे हैं और वे बहुत मजबूत लोग हैं उन्होंने मौलवियों को उत्तर दिया कि इतना लंबा समय तुम को होश न आई। आज जमाअत अहमदिया ने हमें धर्म सिखाया और कुरआन पढ़ाया और अब तुम को विचार आ रहा है अत: यहां से चले जाओ हम तुम्हारी बात नहीं मान सकते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया:

यह मानव मानवीय मंसूबे ख़ुदा की योजना के सामने नहीं ठहर सकते। ख़ुदा की तकदीर है कि उसने अहमदियत की तरक्की करनी है। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इलहामो में फरमाया था कि मैं तुझे सम्मान दूंगा और बढ़ाऊंगा और हर दिन हम यह नज़ारा करते हैं। बावजूद कि अहमदियत के विरोधी ज़ोर लगा रहे हैं और बावजूद के अहमदियों के बारे में यह प्रसिद्ध करते हैं कि यह इस्लाम के बुनियादी अकीदों को मानते नहीं, हज़ारों लोग अहमदियत में शामिल होते हैं मुसलमानों में से भी शामिल होते हैं कुछ लोग हमें नहीं जानते, लेकिन वे कोशिश कर के संपर्क करने का प्रयास करते हैं। मौजूदा दौर की तरक्की ने इस तब्लीग़ के ख़ुद ही समान कर दिए हैं। मुख़ाल्फ़ीन जो तक़रीर और गलत बातें जो सोशल मीडिया पर फैलाते हैं और परिवेश में जो बेहूदा बातें करते हैं उनकी बातों से कई नेक फितरत हमारी ओर आते हैं। यह अल्लाह तआला के काम हैं जो इंसान नहीं रोक सकता। आज यह जलसा जो दुनिया में देखा जा रहा है यह भी अल्लाह तआला की मदद के सबूत है वरना हमारे संसाधन देखें तो यह असंभव है कि इस्लाम का असली संदेश दुनिया के हर कोने में पहुंचा सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा तो कुरआन के इरशाद पर पूर्ण विश्वास करते है जिस ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन ठहराया है। और इसका सबूत है اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ फरमाया। अब इस्लाम एक पसंदीदा धर्म है और अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नेकी के मार्ग को छोड़कर अन्य कोई और रास्ता अपनाना बिदअत है। आमतौर पर ग़ैर अहमदी मुसलमानों ने बिदअतों की राहें अपना रखी हैं और बुल्ले शाह की कुछ काफियों को ही पर्याप्त समझ लिया गया है। नमाज़ों में आनन्द नहीं है और उन्होंने अपने बनाए हुए नज़ीफे बना लिए हैं और पगड़ियां उतार कर फेंक दिया है और धमाल डालते हैं। क्या आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में इस प्रकार की हरकतें होती थीं। ये बातें आज कल भी इसी प्रकार मज्लिसों में हो रही हैं। आपने फरमाया: मुझ पर आरोप लगाते हैं कि नबुव्वत का दावा कर दिया मानो मैं कोई स्थायी नबुव्वत का दावा करता हूं। फरमाया मेरी दावा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आ कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत पर पालन करना और करवाना है मगर तुम नहीं देखते कि झूठी नबुव्वत तो तुम ने ख़ुद बनाई है। रसूल और कुरआन के ख़िलाफ नए नए ज़िक्र निकाल रहे है। इंसाफ से बताओ कि क्या हम शिक्षा में कुछ कम करते हैं या तुम लोग। पीरों और फ़क़ीरों की कब्रों पर सिज्दे करते हैं। फरमाया: आरोप मुझ को न दो अपनी अवस्थाओं को देखो।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और सम्मान का वर्णन करते हुए फरमाया

बेशक याद रखो कोई सच्चा मुसलमान नहीं हो सकता जब तक आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन विश्वास न करे। जब तक मुहद्दिसात से अलग नहीं होता और कथनी और करनी से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानता तब तक कुछ नहीं। हमारा काम हैं कि सभी झूठी नुबुव्वतों को पारा-पारा कर दिया जाए। सभी पीरों को देख लो और व्यावहारिक रूप से देख लो क्या हम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत पर ईमान लाए हैं या वह? फरमाया यह ज़ुल्म और दुष्टता की बात है कि मुंह से ख़ातमन्नबिय्यीन को मानो और व्यवहार से नहीं। जैसे बग़दादी नमाज़ मअकूस नमाज़ बिदअतें इजाद कर ली हैं या जैसे या शेख अब्दुल क़ादिर जिलानी शैअन लिल्लाह का सबूत मिलता है? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय तो अब्दुल क़ादिर जिलानी का अस्तित्व भी नहीं था। फरमाया शर्म करो! क्या इस्लामी शरीयत की पाबन्दी और पालन करना इसी का नाम है? अब ख़ुद ही फैसला करो कि इन बातों को मानकर और इस प्रकार के कर्म रख कर तुम इस लायक हो कि मुझे आरोप दो कि मैंने ख़त्मे नबुव्वत की मुहर को तोड़ा है। असल और सच्ची बात यही है कि अगर तुम अपनी मस्जिदों में बदिअतों को दखल न देते और ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची नबुव्वत पर ईमान ला कर आप के व्यवहार और नक्शे कदम को इमाम बनाकर चलते तो फिर मेरे आने की क्या ज़रूरत थी । तुम्हारा इन बिदअतों और नई नवब्बतों ने ख़ुदा की ग़ैरतों की तहरीक दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चादर में एक व्यक्ति को भेजे जो इन झूठी नबुव्वतों के बुतों को तोड़ कर विनाश कर दे। अत: इस काम करे लिए ख़ुदा ने भेजा है।

फिर आप अपनी बेसत और जमाअत की स्थापना के उद्देश्य का वर्णन करते हुए फरमाते हैं।

हमारी जमाअत को स्थापित ही इस लिए किया गया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत को पुनर्जीवित किया जाए । मदीना तय्यबा तो जाते नहीं मगर अजमेर दूसरी ख़ानकाहों पर नंगे सिर और नंगे पैर जाते हैं। पाकपतन खिड़की से गुजर जाना ही मुक्ति के लिए काफी समझते हैं। किसी ने कोई झंडा खड़ा कर रखा है किसी ने कोई स्थिति धारण कर रखी है। इन लोगों अरसों और मेलों को देखकर एक सच्चे मुसलमान का दिल कांप जाता है कि यह क्या बना रखा है। यदि अल्लाह तआला को धर्म का सम्मान न होता और ख़ुदा का कलाम

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ

न होता तो बेशक आज इस्लाम की वह हालत होती कि उसके मिटने में कोई संदेह नहीं हो सकता था। मगर रक्षा के वादा ने तकाज़ा किया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कोई प्रतिरूप को नाज़ल करे और फिर सि ज़माना में नुबुव्वत को जिन्दा करे और उस ने मुझे मामू बना कर भेजा। हज़ूर अनवर ने फरमाया: कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने महबूब के धर्म को दुनिया में वास्तविक स्थिति में स्थापित करने और प्रसार के लिए भेजा गया है। इस को सांसारिक सरकारों की लगाई गई बाधाएं और बेहूदा बातें फैलने फूलने से रोक नहीं सकतीं। हम ही हैं जिन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की शिक्षा के अनुसार उनके मिशन को जारी रखते हुए 210 देशों में ख़ातमन्नबिय्यीन के झंडे को लहरा दिया है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया आज विरोधियों की बातों के कारण हर अहमदी पर पहले से बढ़कर यह कर्तव्य है कि वह अपनी आस्था और व्यावहारिक स्थिति में एक ऐसा बदलाव लाए जो उसे ख़ुदा तआला के निकट कर दे जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि धरती का विरोध हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं, अगर अर्श के ख़ुदा से हमारा सम्बन्ध हो। अत: नि:सन्देह वह दिन आने वाले हैं जब मुखालफ़तें हवा हो जाएँगी और विरोधी औंधे मुंह गिराए जाएंगे और वादे पूरे होंगे इसके लिए हमें अपने अंदर पवित्र बदलाव पैदा करने होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने ईमान अफ़रोज़ संबोधन के अंत में फरमाया: अल्लाह तआला हमें इन सारी बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे। प्रत्येक दिन हमारा कदम नेकियों में आगे बढ़ने वाला कदम हो। अल्लाह तआला सब अहमदियों को अपनी हिफाज़त में रखे और दुश्मन हर योजना में असफल और नामुराद हो। जलसा के बाद प्रत्येक जलसा में शामिल को अल्लाह तआला ख़ैरियत से घर ो कर जाए और यह जलसा की बरकतों को अपने जीवन का हिस्सा बनाने वाले हों। आमीन!

जलसा सालाना की हाज़री बताते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: 44 देशों का प्रतिनिधित्व करने के साथ उपस्थिति 20,048 है। अल्लाह तआला सभी शामिल होने वालों का हाफिज़ और नासिर हो। यहाँ लंदन के जलसा की हाज़री 5,300 है आख़िर में हुज़ूर अनवर ने दर्द से डूबी हुई दुआ कराई और इस के साथ ही बरकतें लुटाता यह जलसा समाप्त हुआ।

औरतों की जलसा

जलसा सालाना दिनों में हर साल दूसरे दिन महिलाओं का अपना अलग इजलास भी होता है। इस वर्ष यह इज्लास दिनांक 30 दिसम्बर 2017 को बाद दोपहर आदरणीय साहिबज़ादी अमतुल कुद्दूस बेगम साहिबा बेगम साहिबज़ादा मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब (रबवा) की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। आदरणीया वजीहा बिशारत साहिबा कादियान ने सूर: इस्राईल के रुकूअ नंबर 9 की तिलावत की, इस के बाद आदरणीया अमतुल हादी शीरीं साहिबा सहायक वाकफ़ात नौ कादियान ने इन आयतों का अनुवाद पेश किया। सदर लजना इमाअल्लाह कज़ाखस्तान ने कसीदा पेश किया,अदरणीया अमतुल बासित शीरीं साहिबा सेक्रेटरी तहरीक जदीद लजना इमा अल्लाह भारत ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंज़ूम कलाम

हर तरफ चिंता कोदोड़ा थक हम ने

अच्छी आवाज़ में पढ़ा। कार्यक्रम की पहली तक़रीर आदरणीया अमतुल वासे श्माइलह साहिबा उपाध्यक्ष लजना इमाउल्लाह भारत ने बुरी रस्मों के ख़िलाफ जिहाद और अहमदी माताओं की जिम्मेदारयिां की। बाद ही आदरणीया सफिया हबीब साहिबा कादियान ने नाते रसूल "वह जो अहमद भी है और मुहम्मद भी है"अच्छी आवाज़ में पढ़ी। दूसरी तक़रीर मुकर्रमा शमीम अख्तर ज्ञानी साहिबा भूतपूर्व सदर लजना इमा अल्लाह भारत ने तरबियते औलाद विशेषकर विशेष रूप नमाज़ों की पाबन्दी के हवाले से। इस के बाद लजना इमाअल्लाह चेन्नई का मेम्बरात ने तामिल ज़ुबान में तराना पढ़ा और आदरणीया आफिया फज़ल साहिबा ने इस का उर्दू अमुवाद पेश किया। जलसा के अन्त में सदर जलसा श्रीमती साहिबज़ादी अमतुल कुद्दूस बेगस साहिबा ने कुछ कीमती नसीहतें कीं। आप ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें पढ़ने की ओर ध्यान दिलाया तथा ख़ुदा तआला की मुहब्बत पाने के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन करने और आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण पाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने और आप की आज्ञाकारिता का पालन करना आवश्यक है। इस अवसर पर औरतों के जलसा गाह की हाज़री 7333 थी। दुआ के बाद जलसा सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

नज़ामतें तथा क्यामगाहें

इस साल जलसा की व्यवस्था और मेहमानों के ठहरने और अन्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए 33 नज़ामतें और 30 क्यामगाहें बनाई गईं और 4 लंगर ख़ाने जारी किए गए। कादियान के सभी हलक़ों के घरों में ठहरने वाले मेहमानों के लिए 6 स्थान पर फैमलीज़ के अधीन भोजन वितरित करने का प्रबन्ध किया गया था।

ख़िदमते ख़लक विभाग

जलसा सालाना कादियान के विभागों में एक महत्वपूर्ण विभाग ख़िदमते ख़लक है जिसके अधीन मुख्य रूप से अनुशासन और सुरक्षा की ड्यूटियाँ दी जाती हीं। इस साल इस विभाग के तहत ड्यूटी देने के लिए भारत से 683 ख़ुद्दाम और 55 सफे दोयम के अंसार भारत के विभिन्न प्रांतों से आए थे।

इस विभाग के अधीन जलसा सालाना में शामिल होने वाले हर अतिथि को "जलसा पंजीकरण कार्ड" बारकोड के साथ दिया जाता है। नमाज़ों के समय के में, दारुल मसीह के मार्गों और मुहल्ला की सड़कों पर अनुशासन बनाए रखने के लिए खर्डम ने टिप्पणी की। दारुल मसीह, बहश्ती मकबरा, जलसा गाह, कादियान की सभी मरकज़ी मस्जिदों और सभी कयामगाहों में ख़ुद्दाम की स्थायी डयूटयाँ लगाई गईं। इसी तरह कुरआन प्रदर्शनी, अन्नूर प्रदर्शन, मख़ज़न तसवीर, प्रदर्शनी ह्योमेन्टी फर्सट जैसी जगहों पर जहाँ बहुत अधिक मेहमान आते रहे ख़ुद्दाम ने स्थायी डयूटियाँ दें। इसी तरह इस साल दारुल बैयत लुधियाना और मकान चिल्ला कशी होशियारपुर के स्थानों पर भी ख़ुद्दाम को डयूटयों पर निर्धारित किया गया। इस विभाग के अंतर्गत, बार्डर, रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे आदि में मेहमानों की सुविधा के लिए ख़ुद्दाम की ड्यूटियां लगाई गई थी। लास्ट एण्ड फाउंडेशन और घोषणा का कार्यालय की स्थापना भी हुई, जिस के अनतर्गत लापता वस्तुओं की खोज की गई और लौटाया गया। प्राथमिक चिकित्सा और आपातकालीन सेवा का कार्यालय भी स्थापित किया गया था जिसके अधीन 24 घंटे मेहमानों को सुविधा और राहत पहुंचाने के लिए ख़ुद्दाम दक्षता के साथ ड्यूटियाँ देते रहे। अल्लाह तआला सभी स्वयंसेवकों ख़ुद्दाम तथा अंसान को हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनाए और अपने फज़ल से उन सब की सेवाओं को स्वीकार करे। आमीन।

तरबियत विभाग

जलसा सालाना कादियान के दिनों में दिनांक 25 दिसंबर 2017 से 7 जनवरी 2018 ई मस्जिदे अक्सा, मस्जिद मुबारक और मस्जिद अनवार स्थित मुहल्ला दारुल अनवार में जमाअत के साथ नमाज़े तहज्जुद अदा की गई। इसी तरह कादियान के मुहल्लों की अन्य 7 मस्जिदों में भी जलसा सालाना के तीनों दिन जमाअत के सा? नमाज़ तहज्जुद का प्रबन्ध किया गया। नमाज़ तहज्जुद के लिए लोगों को लाऊड स्पीकर पर दरूद शरीफ पढ़ कर जगाने का प्रबन्ध किया गया। इस विभाग के अन्तर्गत कादियान के विभिन्न मुहल्लों का गलियों तथा सड़कों पर तालीमी तथा तरबियती बैनर लगाए गए। इस के अतिरिक्त उर्दू और अंग्रेजी भाषा में जलसा सालाना के कार्यक्रम पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किए गए जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के जलसा सालना से संबंधित सुनहरे उपदेश शामिल किए गए।

बैयतुद्दुआ में नफलों के अदा करने और पवित्र स्थानों की ज़ियारत

हर साल की तरह इस साल भी भारत और अन्य देशों से आने वाले मेहमानों को नियमित व्यवस्थित रूप से बैयतुद्दुआ में नफलों के अदा करने का प्रावधान किया गया था। मेहमान बड़े शौक से बैयतुद्दुआ में नफ्ल पढ़ने के लिए देर रात तक लम्बा लम्बी लाइनों में अपनी बारी की प्रतीक्षा और अल्लाह तआला की हम्द तथा

प्रशंसा करते रहे। मेहमानों की बहुतायत के कारण प्रत्येक अतिथि को एक बार ही बैयतुद्दुआ जाने का मौका मिलता और वह इसे महान सौभाग्य समझता।

इसी तरह अन्य पवित्र स्थानों जैसे मस्जिद मुबारक, मस्जिद अक्सा, मिनारतुल मसीह, अद्दी (दारुल मसीह) और बहश्ती मकबरा आदि स्थानों पर भी मेहमानों की बहुतायत रही और बड़े शौक से मेहमानों ने उन मुकद्दस स्थानों की ज़ियारत की। विशेष रूप से अद्दार में मौजूद सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत अम्माजान रज़ियल्लाहो अन्हा और सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के तबर्कों को मेहमानों ने बड़ी श्रद्धा से देखा। नफ्फल और अद्दार में मौजूद तपर्रुकात के देखने के लिए मर्दों तथा औरतों के अलग-अलग समय थे।

तरजुमानी विभाग

इस साल जलसा सालाना कादियान 2017 ई के अवसर पर नीचे लिखी 9 भाषाओं में जलसा की तक़रीरों और कार्रवाई का अनुवाद का प्रबंध था। अरबी, रूसी, इंडोनेशियाई, अंग्रेज़ी, मलयालम, तमिल, तेलुगू, बांग्ला, कनड़। अल्लाह तआला की कृपा से सभी भाषाओं के अनुवादकों ने अहसन रंग में ड्यूटियों को अदा किया। जलसा के सभी कार्यक्रम और विशेष रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की समापन तक़रीर 9 भाषाओं में अनुवाद किया गया और बड़ी संख्या में लोगों ने इस से लाभ उठाया। औरतों के विशेष सत्र का भी 5 भाषाओं में अनुवाद का प्रबंध भी था (अरबी, अंग्रेजी, इन्डोनेशियाई, मलयालम और बांग्लादेश)

प्रिंट और मीडिया

जलसा सालना के तीनों दिन प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया की कवरेज हुई। बटाला, अमृतसर, गुरदासपुर, जालंधर, चंडीगढ़ और भारत के कई राज्यों से इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि जलसा सालाना के तीनों दिन कवरेज के लिए आए। जलसा के दूसरे दिन, सर्व धर्म सम्मेलन और हुज़ूर अनवर अयय्दहुल्लाह तआला के ख़िताब की विशेष रूप से कवरेज हुई।

निकाहों की घोषणाएं

जमाअत के बहुत सारे लोगों की इच्छा होती है कि जब वह जलसा सालाना कादियान में शरीक हों तो उनके बच्चों का निकाह मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की पवित्र बरकत वाली बस्ती में पढ़ा जाए। अल्लाह तआला की कृपा से इस साल जलसा सालाना के अवसर पर दिनांक 30 दिसंबर 2017 को मस्जिद दारुल अनवार में आदरणीय मौलाना मुजफ्फर अहमद नासिर साहिब नाज़िर इस्लाहो व इर्शाद मर्कज़िया कादियान ने 19 निकाहों की घोषणा की। इस अवसर पर आप ने आयत मसनूना पढ़ने का बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला विवाह के निकाहों के बारे में सुनहरे उपदेश पढ़कर सुनाए। बाद के दिनों में अधिक 3 निकाहों की घोषणा हुई जो आदरणीय इनायतुल्लाह साहिब एडिशनल नाज़िर इस्लाहो इर्शाद वक्फ आरज़ी तालीमुल कुरआन और आदरणीय मुहम्मद करीमुद्दीन साहिब शाहिद सदर कज़ा बोर्ड कादियान ने पढ़ाए।

ह्योमेन्टी फर्सट एगज़ीबेशन

जलसा सालाना कादियान 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की स्वीकृति से ह्यूमेन्टी फर्सट की तरफ से अहमदिया केन्द्रीय पुस्तकालय कादियान के हॉल में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में, पिछले दो वर्षों में, भारत के विभिन्न प्रांतों में ह्यूमेन्टी फर्सट द्वारा किए गए कल्याणकारी कार्यों को तस्वीरों के माध्यम से दिखाया गया था। इसी तरह से ह्यूमेन्टी फर्सट भारत कीतरफ से तैय्यार की गई कुठ चीज़ें जैसे Key-Chain कापी मग आदि बिक्री हेतु रखे गए। जलसा सालाना कादियान के अवसर पर यह Exhibition दिनांक 24 दिसंबर 2017 से 5 जनवरी 2018 ई तक जारी रही। लगभग 7600 लोगों ने इस प्रदर्शनी को देखा। Exhibition में विज़िटर बुक भी रखी गई थी जिसमें आने वालों ने अपने विचारों का उल्लेख किया था। अल्लाह तआला की कृपा से ह्यूमेन्टी फर्सट भारत की यह Exhibition काफी पसंद की गई। ह्यूमेन्टी फर्सट भारत के दूरदराज़ के क्षेत्रों में मेडिकल कैम्प, ब्लड डोनेशन ह्यूमेन्टी फर्सट, ग़रीबों की सहायता, छात्रों की सहायता, स्वच्छ पेयजल प्रबंधन के अलावा प्राकृतिक आपदाओं के अवसर पर त्वरित रिलीफ पहुंचाने के काम की तौफ़ीक़ पा रही है। जलसा सालाना कादियान 2017 ई के अवसर पर जलसा गाह परिसर में भी ह्यूमेन्टी फर्सट का एक परिचयात्मक स्टाल भी लगाया गया था जिसे 4000 लोगों ने Visit किया।

अन्नूर प्रदर्शन कोठी दारुसलाम

सन 2015 ई में जलसा सालाना के अवसर पर मुहल्ला दारुस्सलाम में कोठी हज़रत नवाब मुहम्मद अली खान साहिब में जहां हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपने जीवन के अंतिम दिन गुज़ारे, को renovate करके "अन्नूर नुमायश" के नाम से एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया था। इस साल भी जलसा सालाना के अवसर पर प्रचुर मात्रा में आगंतुक इस प्रदर्शनी को देखने आये। रोज़ाना नमाज़ फ़ज्र से रात 10 बजे तक प्रदर्शन खुली रही। जलसा के तीनों दिन में नुमायश का समय नमाज़े फ़ज्र से लेकर सुबह 9 बजे और शाम को मग़रि? तथा इशा की नमाज़ के बाद से 10 बजे तक। इस प्रदर्शनी में जमाअत अहमदिया के इतिहास के विभिन्न हिस्सों की तस्वीरें और पोस्टर लगाए गए थे। इसके इलावा नश्रो इशाअत के माध्यम से नश्रो इशाअत की बिल्डिंग के परिसर में ही कुरआन प्रदर्शन और मख़ज़ने तस्वीर विभाग स्थापित है। जलसा के अधिकांश दिनों में, लोगों ने इन प्रदर्शनियों का निरीक्षण किया।

mta अरबी का लाइव कार्यक्रम इस्मउ सौतस्समा

जलसा सालाना अवसर पर दिनांक 20 से 22 दिसंबर 2017 ई अरबी कार्यक्रम "इस्मउ सौतस्समा जा अल मसीह जा अल मसीह" एम. टी ए. इटरनेशनल के कादियान स्टूडियो से लाइव प्रसारण किया गया। जिस में निम्नलिखित उलमा शामिल हुए। आदरणीय शरीफ औदा साहिब अमीर जमाअत अहमदिया कबाबीर मेज़बान के रूप में, आदरणीय फत्ही अबदुस्सलाम साहिब (मिस्र), आदरणीय तमीम अबू दकह साहिब (जॉर्डन), आदरणीया ताहिर अहमद नदीम साहिब (लंदन)। इस कार्यक्रम में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का अरबों से प्यार, अरबी भाषा से प्रेम और जमाअत अहमदिया की अरबों के लिए सेवाएं आदि विषयों पर चर्चा की जाती रही। इस कार्यक्रम में निम्नलिखित विवरण के अनुसार विभिन्न शॉर्ट डौक्यूमैंटरी भी दिखाई गईं।

(1)सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का अरबों के नाम संदेश। जो प्यारे आक़ा ने 2015 ई में लाइव अरबी कार्यक्रम के दूसरे दिन भिजवाया था, उसका कुछ हिस्सा Play किया गया।

(2)सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की अलहवार में भागीदारी और Video संदेश चलाया गया।

(3)सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबि की आवाज़ में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद के उद्धरण play किए गए, जिनमें हज़रत मसीह मौऊद की अरबों से प्यार का इजहार है।

(4) हज़रत मसीह मौऊद के अंश का अरबी अनुवाद पेश किया गया।

(5) सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी की अरबों को नसाहतें।

(6) हज़रत चौधरी सर मुहम्मद ज़फरुल्लाह ख़ान साहिब का अरबों के लिए वैश्विक सेवाओं के चित्र वीडियो के रूप में दिखाए गए।

(7) सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दो कसीदे कादियान के दृश्य शामिल कर के दिखाए गए। दूसरे दिन के प्रोग्राम में 2 टेली फोन काल लिए गए जिन में शामिल होने वालों ने प्रोग्राम के विषय पर अपनी प्रतिक्रियाएं दीं।

अफ्रीका के लिए लाईव कार्यक्रम The Messiah of the Age

इसी तरह दिनांक 3 जनवरी से 5 जनवरी 2018 अल्लाह तआला की कृपा से एम. टी. ए अन्तर्राष्ट्रीय के लिए कादियान स्टूडियो से The Messiah of the Age नाम से अफ्रीका के लिए लाइव कार्यक्रम प्रसारित हुआ। यह कार्यक्रम एक घंटे पर आधारित था, जो अंग्रेज़ी भाषा में पेश हुआ था और इस में शामिलहोने के लिए निम्नलिखित मेहमान शामिल थे। आदरणीय मौलवी अब्दुल्ला साहिब डुबा मुरब्बी सिलसिला अमेरिका होस्ट, मुहतरम मौलाना अज़हर हनीफ साहिब उप अमीर जमाअत अहमदिया अमेरिका, मोहतरम मौलाना हाफ़िज़ अब्दुल ग़नी साहिब मुरब्बी सिलसिला नाइजीरिया, आदरणीय मौलवी अब्दुल रहमान चीमा साहिब आदरणीय अब्दुल ग़नी साहिब बीनियट ऑफ अमेरिका, आदरणीय हबीब शफीक साहिब ऑफ अमेरिका।

इस कार्यक्रम में जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम के जन्म स्थान तथा रहने के स्थान कादियान दारुल अमान का परिचय,सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उत्तम चरित्र, जलसा सालाना का परिचय, इमाम महदी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने का महत्त्व और ख़िलाफत अहमदिया की बरकतें और ख़िलाफत ख़ामसा के आशीर्वाद और वर्तमान समय में जमाअत अहमदिया को प्राप्त होने वाली बरकतों

शेष पृष्ठ 16 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -10)

☆ मेरा मानना है कि मेरा अहमदी होना और इस जमाअत से मिलना यह सब अल्लाह तआला के फज़्ल से हुआ है।

☆ सरकार के प्रति सहानुभूति रखना और इस तरह की दुआ मांगना भी ईमान का एक हिस्सा है।

☆कुरआन का वह अनुवाद पढ़ें जो जमाअत अहमदिया ने प्रकाशित किया है, वह अनुवाद अधिक लाजीकल है और बहुत स्पष्टीकरण के साथ अनुवाद किया गया है।

बैअत करने के बाद मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

एक अन्य छात्र, डुरेन साहिब, ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, "आज, ख़ुदा तआला की कृपा से हुज़ूर अनवर की मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ।" मेरी हमेशा से हुज़ूर अनवर से मुलाकात की इच्छा थी मैंने एक बार सपना देखा कि मैं हुज़ूर से मिल रहा हूं, और यह सपना आज पूरा हुआ। मैं अल्लाह तआला का आभारी हूँ मैं पहली बार जलसा जर्मनी में शामिल हुआ। जलसा ने मुझे बहुत ही आध्यात्मिक प्रभाव दिया है। यहां पर बंधुत्व और भाईचारे का माहौल था और विभिन्न देशों से आए हुए मेहमानों के बारे में पूछा तो सभी ने सकारात्मक उत्तर दिया। सभी ने जलसा के माहौल की सराहना की और कहा कि जमाअत अहमदिया अल्लाह तआला के फज़्ल से सारे मुसलमानों के अलग अपनी एक पहचान रखती है। मैं सीरिया के रहने वाले एक अरब दोस्त से मिला। मैंने जमाअत अहमदिया से संबंधित सवाल किया तो उन्होंने जवाब दिया कि जमाअत अहमदिया बाकी सभी मुसलमान फिर्को के लोगों से अलग स्थान रखती है क्योंकि बाकी समुदाय उग्रवाद को बहुत हवा देते हैं। फिर एक दोस्त जो मास्को में पैदा हुए थे और उसका नाम थामस था और उन से मुलाकात हुई और वह लिथोनिया में रहते हैं, उन्होंने मुझ से इस्लाम अहमदियत के बारे में पूछा तो मेरे जवाब से वह बहुत संतुष्ट हुए।

कसीमो वागल नूरा साहिबा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "हम गीज़ान शहर में मस्जिद के उद्घाटन समारोह में गए थे, जहां बहुत ही अच्छा माहौल था।" बहुत उच्च गुणवत्ता थी। अल्लाह तआला करे कजाखस्तान में पंजीकरण की समस्या का समाधान हो जाए और हम अपनी मस्जिद का निर्माण कर सके। ताकि बच्चों को प्रशिक्षित होने के लिए अधिक से अधिक अवसर मिलें। जलसा सालना में शामिल होना बहुत अच्छा था और हमें बहुत सारी बरकतें समेटें। अल्लाह तआला उन सभी लोगों पर अपना फज़्ल फरमाए जिन्होंने इस जलसा की व्यवस्था में भाग लिया है।

आलम जान तोकामौफ साहिब ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा, "अल्लाह तआला की विशेष कृपा से ख़ाकसार को इस साल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का अवसर प्राप्त दुआ। मुझे इस जलसा के माहौल से बहुत अधिक सन्तोष प्राप्त हुआ है। मुझे जलसा सालना के सारे प्रबन्धों के अपने आप होने पर बहुत हैरानी है कि इतने बड़े पैमाने पर आयोजित किए जा रहे हैं परन्तु कोई गड़बड़ नहीं हुई। अल्लाह तआला के फज़्ल तथा रहम के बिना ये सब कुछ होना सम्भव नहीं था। इस प्रकार में काम करने वालों का भी शुक्रिया अद करता चाहता हूं जो कि ख़ुशी-ख़ुशी अपने काम कर रहे थे। खाना भी बहुत अधिक मज़े का था। और विभिन्न प्रकार का था। जलसा की हाज़री बहुत अधिक थी। 41 हज़ार लोगों की हाज़री असामान्य थी। इसी तरह, बैअत समारोह ने भी हृदय को प्रभावित किया है। हुज़ूर अनवर से मुलाकात के दौरान हमें हुज़ूर अनवर से बातें करने का मौका मिला और हुज़ूर ने हमें और हमारे बच्चों के लिए उपहार प्रदान फरमाए। कज़ाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल वफ्त की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात साढ़े बारह बजे तक जारी रही। इस के बाद प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों बारी बारी अपने पसंदीदा आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इंडोनेशिया

इस कार्यक्रम के बाद इंडोनेशिया से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अजीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इंडोनेशिया से इस साल जर्मनी में 19 आदमियों का प्रतिनिधिमंडल शामिल हुआ था।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर की मौजूदगी में कहा कि उन्हें जलसा सालाना बहुत अच्छा लगा। लेकिन हमारे लिए एक कमा रही कि अनुवाद इन्डोनेशियाई भाषा में नहीं था। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यह आपके अमीर व्यक्ति का कुसूर है, कि वे आदमी उपलब्ध नहीं कराते। अमीर साहिब इंडोनेशिया इस अवसर पर उपस्थित थे। अमीर ने कहा, "हम इंशा अल्लाह तआला कोशिश करेंगे। एक मुबल्लिग़ का नियुक्ति लंदन के लिए हो चुकी है वीज़ा की कारवाई चल रही है।

इस अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने एक मुबल्लिग़ को इन्डोनेशियाई भाषा सिखाने के हवाले से कुछ प्रशासनिक निर्देश दें । दल के एक सदस्य ने अर्ज़ किया कि उनकी जमाअत में जहां हमारी मस्जिद है वहाँ साथ वाली ज़मीन भी हम ने ख़रीद ली है और अब मस्जिद के विस्तार का कार्यक्रम है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अल्लाह तआला कृपा करे।

एक सदस्य ने अर्ज़ किया कि जहां तीन अहमदियों की शहादत की घटना हुई थी मैं भी उनके साथ इस अवसर पर शामिल था और गंभीर रूप से घायल हुआ था और चमत्कारिक ढंग से जीवित बच गया था डॉक्टरों ने सात घंटे आप्रेशन किया था उस पर हुज़ूर अनवर ने शफकत करते हुए कहा कि " अब आप पक्के अहमदी हो गए हैं। "

एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि मैं सूचना सुरक्षा विभाग आईटी में काम करता हूँ और पत्नी के साथ मुलाकात में शामिल हुआ हूं।

जब एक महिला जब ख़ुद का परिचय करवाने लगी तो हुज़ूअर नवर ने कहा: "मैं जानता हूं। यह पिछले वर्ष जलसासालना यू.के में आई थीं। बाद मैं जापान में भी आई थीं जहां मैं जाता हूं वहां पहुंचती हैं।

"एक महिला ने रोते हुए कहा कि"मैं पहली बार जलसा में शामिल हुई हूं। मैं पहले अहमदी नहीं थी शादीके बाद अहमदी हुई हूं। मैं अपने लिए दुआ का निवेदन करती हूं। अमीर साहिब ने बताया कि यह औरत लजना की आमला की भी मेम्बर हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया "अल्लाह तआला फज़्ल करे

एक औरत ने कहा,"मेरे यहां अभी तक कोई बच्चा नहीं है। उस पर हुज़ूर अनवर ने कहा "अल्लाह तआला कृपा करे। "

एक महिला ने रोते हुए अर्ज़ किया कि हुज़ूर अनवर से माफी चाहती हूँ। मेरी एक ग़ैर अहमदी व्यक्ति से शादी हुई थी। मेरे दो बच्चे हैं दोनों अल्लाह तआला के फज़्ल से अहमदी हैं इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि क्या इन की माफी हो चुकी है अमीर साहिब इन्डोनेशिया ने बताया कि इन की माफी हो चुकी है।

एक बच्ची ने निवेदन किया कि मैं कालेज में पढ़ती हूं अपनी सफलता के लिए दुआ का निवेदन करती हूं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अल्लाह तआला फज़्ल फरमाए आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने शफकत करते हुए फरमाया सभी दोस्त बारी बारी आ जाएं और तस्वीर बनवा लें। अत: सब ने अपने प्यारे आका के साथ तस्वीरों बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया । हुज़ूर अनवर ने शफकत करते हुए वफद के सारे लोगों को एक एक कलम तौहफे में दिया। इन्डोनेशियन वफद की हुज़ूर अनवर से मुलाकात बारह बज कर दस मिन्ट तक जारी रही।

एस्टोनिया

इस के बाद एस्टोनिया से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह

तआला से मुलाकात का शर्फ पाया। एस्टोनिया से 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल था।

एक महिला लमीस अब्दुल जमील साहिबा ने कहा: मैं एक फिलिस्तीनी हूँ और एक ऐस्तोनियन नौजवान से शादी कर ली। मेरे तीन बहनें हैं जो फिलिस्तीन से जर्मनी जलसा सालाना में भाग लेने के लिए आई हुई हैं। मैं दूसरी बार जलसा में शामिल हो रही हूं। पहली बार जलसा में शामिल होने के बाद जमाअत के बारे में बहुत संदेह लेकर वापस गई थी। लेकिन इस बार मैंने इस जलसा के दौरान बहुत दुआ की कि ख़ुदा तआला मुझे सीधा पथ दिखाए और अगर जमाअत अहमदिया मेरे लिए सही रास्ता है और जीवन जीने का सही तरीका है तो अल्लाह तआला मुझे ख़ुद ही निर्देश दे।

अत: अगले दिन मैंने ही मैंने बैअत कर ली। मेरे पति अहमदी नहीं हैं अभी बच्चे नहीं हैं। मुझे बहुत भाग्यशाली हूं कि इतने लोगों ने मेरा जलसा में शामिल होने शमूलयित और मेरे अहमदी होने के लिए दुआ की। पिछले साल मुझे जलसा की सारी तकरीरें सुनने का अवसर नहीं मिला। लेकिन इस साल इन तकरीरों को बहुत ध्यान से सुना, जिसके कारण अल्लाह तआला ने मेरे दिल में दृढ़ विश्वास पैदा किया है कि यह जमाअत सच्ची है। इसलिए मैंने बैअत कर ली और तीसरे दिन बैअत समारोह में शामिल हो गई।

महोदया ने कहा: "मैंने महिलाओं के मध्य में इस प्रकार की मुहब्बत और प्रेम की भावना अनुभव नहीं की थी। विभिन्न देशों से आने वाली महिलाओं से, मैंने रिश्ते बनाए जिन से शायद कभी भी न मिल सकूं लेकिन हमेशा अपनी दुआओं में उन्हें याद रखूंगी। मेरा मानना है कि मेरा अहमदी होना और इस जमाअत से मिलना यह सब अल्लाह तआला के फज़ल से हुआ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अल्लाह तआला फज़ल फरमाए दे। महोदया ने कहा कि मेरी पति के लिए दुआ करें। मां के लिए दुआ करें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "वापस जा कर अपने पति को बताएं कि मैंने बैअत की है। आपके पति तो एस्तोनियाई है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप का कौन सा धर्म है। महोदया ने कहा कि दुआ करें कि मेरा मियां अहमदी हो जाए। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

एस्टोनियाई से एक मेहमान लौरा रेइंटाम साहिबा जलसा में शामिल हुईं की। महोदया ने मुलाकात के दौरान कहे कि मैं सास्टर कर रही हूं और मैंने इस्लाम स्वीकार किया है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: "इस्लाम के बारे में अधिक पढ़ें। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आख़री ज़माना में जब इमाम महदी आए, तो इसे स्वीकार कर लेना और उस को मेरे सलाम पहुंचाना। अत: आप अधिक अध्ययन करें और जमाअत की किताबें पढ़ें और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद का पालन करने वाली बनें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कुरआन का वह अनुवाद पढ़ें जो जमाअत अहमदिया ने प्रकाशित किया है, वह अनुवाद अधिक लाजीकल है और बहुत स्पष्टीकरण के साथ अनुवाद किया गया है।

इस के बाद महोदया ने कहा कि वह जलसा सालाना के प्रबन्ध से बहुत प्रभावित हुई है। ऐसा लगता था कि इस ा प्रबन्ध करने वालों ने पहले से ही हर तरह की स्थिति को सोचा था। सभी प्रकार की समस्याओं और ज़रूरतों का हल मौजूद था। मुझे एक मेहमान के रूप में सम्मानित किया गया था और मेरे सभी तरह से ध्यान रखा गया। मैंने जलसा सालना के सामान्य माहौल को सामान्य रूप से अच्छा पाया। जलसा में शामिल होने वाले शांति पूर्ण, मैत्रीपूर्ण और मददगार थे। मुझे इस बात से ख़ुशी है कि कि मेरी बहुत से अच्छे लोगों से मुलाकात हुई। मैंने जलसा की तकरीरें सुनीं और विशेष रूप से इमाम जमाअत अहमदिया की तकरीर से बहुत आन्नद उठाया जो कि मौजूदा हालात के बारे में था। इन ख़िताबों के पैग़ाम बहुत स्पष्ट थे। और जो नई समझ थी जो मैं अपने साथ वापस ले कर जाऊंगी। इस जलसा की सन्देश और इमाम जमाअत अहमदिया के अन्तिम सन्देश बहुत कुछ सोचने पर मजबूर करता है और इसका मुझ पर बहुत प्रभाव है। यह वास्तव में दिल को छो लेने वाल अनुभव था। मुलाकात के अन्त पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने वफद के सारे लोगों को कलम प्रदान किए और मैम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनाने को सौभाग्य प्राप्त किया। एस्टोनियाई प्रतिनिधिमंडल के साथ मुलाकात एक घंटे तक जारी रही।

कोसोवो

इस के बाद कोसोवो के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। कोसोवो से 18 प्रतिनिधिमंडल पर आधारित वफद जलसा में शामिल हुआ। इनमें से 17 अहमदी दोस्त और एक ग़ैर अहमदी महिला थीं। सब से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने प्रतिनिधिमंडल के तमाम सदस्यों का हाल पूछा। इस के बाद एक दोस्त ने कहा कि वे हर साल जलसा में आते हैं और बहुत अच्छा प्रभाव लेते हैं। हम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करते हैं कि हुज़ूर ने हमारे लिए मुबल्लिग़ भेजे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने पूछा कि क्या मुब्बलिग़ ने भाषा सीख ली है? मैंम्बरों ने निवेदन किया कि मुबल्लिग़ ने भाषा सीख ली है और बहुत चुस्त और काम करने वाले मुल्लिग़ हैं।

इस के बाद एक अहमदी दोस्त पैटरिट बायटाकी साहिब ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर की तकरीरें बहुत अच्छी थीं। हम तरह से कोशिश करेंगे कि ख़िलाफत की पैग़ाम प्रत्येक को पहुंचा दें। दुआ का निवेदन है कि अल्लाह तआला हमें हुज़ूर की इन बातों पर अमल करने की तौफीक़ प्रदान करे। और निवेदन किया कि हमारी संख्या बढ़ती रहे परन्तु यह तभी सम्भव हैं कि हूज़ूर हमारे लिए दुआ करते रहें।

कोसोवो के एक दोस्त Bezmir Yesi ने अर्ज़ किया कि कोसोवो में तीन महीने से रूलिंग पार्टी खत्म हो गई है और जो कारण बताए जाते हैं वह निजी हित हैं। क्या सरकार के बेहतरी और न्याय के सुधार के लिए कोई दुआ है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अल्लाह तआला उन्हें बुद्धि दे और सरकार को न्याय के आधार पर बनाए।

हुज़ूर अनवर ने और फरमाया कि सरकार के प्रति सहानुभूति रखना और इस तरह की दुआ मांगना भी ईमान का एक हिस्सा है। उन्होंने कहा: जलसा की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। कोई एक कमी नज़र नहीं आई तकरीर भी बहुत अच्छी थीं।

एक और दोस्त एग्रोन बिनाजज ने कहा कि प्रबंधन बहुत अच्छा था। 40,000 से अधिक लोग यहां इकट्ठे हुए थे लेकिन कोई शिकायत नहीं की गई थी। बच्चों से लेकर बड़ी उम्र के बूढ़ों तक को कोई समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। सभी काम बहुत आराम से समाप्त हुए।

शिष्टमंडल के एक सदस्य शेप ज़ेकाराजी ने कहा कि हुज़ूर अनवर के चेहरा पर जी नूर है वह आज तक किसी में नहीं देखा। आप ने और कहा कि विनीत पूरी दुनिया के लिए दुआ करता है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "आप को अपने देश के लिए भी दुआ करनी चाहिए।

एक सदस्य अलबान ज़की राज साहिब ने अर्ज़ किया कि जलसा माशा अल्लाह उत्कृष्टता के साथ आयोजित किया गया था और प्रशासन का भी धन्यवाद किया। महोदय ने हुज़ूर की सेवा में कोसोवो के सभी जमाअत के सदस्यों का सलाम पेश किया और निवेदन किया कि उनका बच्चा वक्फ नौ की बरकत वाली तहरीक में शामिल है और दुआ का अनुरोध है कि अल्लाह तआला उसे नेक और सालेह मुरब्बी सिलसिला बनाए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

इसके बाद प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य Shkelqim Bytyci साहिब कि कोसोवो जमाअत के मुअल्लिम हैं उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ की सेवा में दुआ का अनुरोध। और अर्ज़ किया कि जलसा का प्रबंधन बहुत अच्छा था। आतिथ्य का हक बहुत उच्च रूप से अदा किया गया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने कोसोवो जमाअत तजनीद पूछी जिस पर मुअल्लिम साहिब ने बताया कि वहाँ 132 व्यक्ति जमाअत में शामिल हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: वहां कोसोवो में 2 शिक्षकों और एक मुबल्लिग़ है ंकोसोवो एक छोटी सी जमाअत है और तीन मिशनरी हैं, इसलिए संख्या बढ़ाने की कोशिश करें। अगले साल, जमाअत की संख्या 500 करो और फिर अगले साल एक हज़ार हो जाएगी। तो यह अगले साल दो हज़ार हो जाएगी और यह हर साल बढ़ती चली जाएगी और चार हज़ार से आठ हज़ार हो जाएगी।

प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य इवेल कुवेशा साहिब ने ने कहा कि वह पहली बार हाज़िर हुए हैं और उन के लिए शामिल होना गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। महोदय ने हुज़ूर अनवर की

सेवा में उनकी मग़फिरत के लिए दुआ का निवेदन किया था इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने फरमाया कि अल्लाह तआला रहम करे। इसी प्रकार निवेदन किया कि वह नियमित हुज़ूर को ख़त लिखते हैं जिस पर हुज़ूर का ख़ूबसूरत जवाब भी आता है जिस को पढ़ कर बहुत ख़ुशी होती है।

प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य ब्लेयर की राज साहिब ने कहा कि वह आज कल बेरोजगार हैं और मानव संसाधन में अध्ययन कर रहे हैं और काम की तलाश में हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।"

एक मित्र आतरन मऊराज़ साहिब ने कहा कि ख़ाकसार दुआ का निवेदन करना चाहता है कि ख़ाकसार जलसा में शामिल होने के लिए काम के लिए इन्ट्रवियू छोड़कर हाज़िर हुआ है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।"

एक सदस्य दरदान रमज़ान साहिब ने अर्ज़ किया कि वह हर बार जलसा जर्मनी में शामिल होते हैं लेकिन पिछले साल नहीं आ सके तथा उन्होंने अर्ज़ किया कि कुछ महीने पहले उनकी मां की मृत्यु हुई थी और फिर पिताजी भी दाग मफारकत दे गए। पिता पिछले साल जलसा में आए थे लेकिन बैअत नहीं कर सके उन की मग़फिरत के लिए दुआ का निवेदन है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

एक दोस्त जेटन बाजरा साहिब ने कहा कि वह अपने परिवार में एकमात्र अहमदी हैं और परिवार के बाकी हिस्सों में अहमदियत के शामिल होने के लिए दुआ का निवेदन करते हैं। और उन्होंने कहा कि वह हुज़ूर अनवर को उपहार पेश करना चाहते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: "जब आप तस्वीर बनाए हैं, तो उस समय दे सकते हैं।"

प्रतिनिधिमंडल में शामिल अलबीना गाशी साहिबा जोकि आगरोबना काई साहिब की पत्नी हैं और ग़ैर अहमदी हैं, यह पीछे बैठी हुई थीं, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने उन्हें कहा कि आप आगे आ जाएं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने उन से पूछा कि वह क्या काम करती हैं? महोदया ने कहा कि उन्होंने मनोविज्ञान में मास्टर किया हुआ है। और उन्होंने कहा कि जलसा की तकरीरें बहुत अच्छी थीं। ख़ाकसार अहमद नहीं है, लेकिन मैं इन चीजों को करने की कोशिश करूँगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "आपके मनोविज्ञान की दृष्टि से महिलाओं के साथ संबंध होगा। आप हमारी महिलाओं और दूसरी महिलाओं के बीच किस प्रकार का अन्तर देखती हैं? क्या हमारी महिलाएं तनाव से ग्रस्त हैं? महोदया ने उत्तर दिया कि जहां तक तकरीरें सुनने का सम्बन्ध है वह सुनने की दृष्टि से अच्छी थीं परन्तु व्यवहारकि रूप से कमी थी क्योंकि मर्द और औरतें अलग अलग थीं। हुज़ूर ने इन से पूछा कि क्या वह लजना की तरफ गई थीं? महोदया ने जवाब दिया कि वह लजना की तरफ नहीं जा सकीं। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "आप ने पुरुषों में बैठ कर कैसे पता लगाया कि पुरुषों और महिलाओं की समानता नहीं है? महिलाओं में जाएं और पता करें कि क्या वे खुश हैं या नहीं। समानता है या नहीं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया, "सामाजिक विज्ञान में दो विचार हैं। आपने केवल आधा ही देखा है, तो आप कैसे यह परिणाम निकाल सकती हैं कि यह व्यावहारिक तौर पर कम हो गया था। यदि आप जाती हैं और देखती हैं कि क्या गिरावट आई है, तो आप आरोप बनता था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: " अभी नमाज़ होने वाली है। आप महिलाओं में जाकर बैठें उनसे बातें करें और फिर देखें कि उनको कोई परेशानी या मानसिक दबाव तो नहीं है। क्या वे अलग बैठ कर खुश हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "हमारी महिलाएं भी काम करती हैं। डाक्टर मर्दों के साथ काम करती हैं इन में टीचर भी हैं विज्ञान और कुछ अन्य व्यवसायों से भी सम्बन्ध रखती हैं और कुछ दूसरे काम भी करती हैं। वे सभी पर्दे की रियायत रखते हुए पुरुषों के साथ काम करते हैं। उसी तरह जहां धार्मिक अवसर हों, वे खुद को स्वतंत्र रूप से अलग करती हैं। महिलाओं के जलसा में उनकी अपनी तकरीरें थी उन्होंने अपने कार्यक्रमों का आयोजन किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "इस्लाम कहता है कि पुरुषों और महिलाओं के काम का एक विभाजन है। मैंने अपने ख़िताबों में अलग-अलग में बता चुका हूं कि हमारी जमाअत में पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक शिक्षित हैं महिलाओं की गुणवत्ता पुरुषों की तुलना में अधिक है इसका मतलब है कि अगर महिलाएं स्वतंत्र हैं तो केवल बेहतर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जब आप अगली बार आएं तो सवाल तैयार करके लाएं और पुरुषों और महिलाओं दोनों से सवाल करें और फिर देखें कि दोनों में ज्यादा कौन योग्य है? प्रश्न पूछें और सवाल पूछें। इस के बाद महोदाय ने पर्दे की आवश्यकता के बारे में पूछा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "पर्दे की चर्चा लंबी है। एक सार्वभौमिक ज्ञान है और एक धार्मिक ज्ञान है और धार्मिक शिक्षा है। ख़ुदा तआला की बात हम ने माननी और इस के अनुसार पालन करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: " मर्दों का मनोविज्ञान भी देखना चाहिए। क़ुरआन ने पहले पुरुषों को कहा है कि वे अपनी नज़रें नीची रखें और फिर महिलाओं को बताया कि वे पर्दा करें। पुरुष महिलाओं को देखते रहते हैं जब कि औरतें ऐसा नहीं करतीं। इस के बावजूद औरतों को कहा है कि सावधानी करें मर्दों का कोई भरोसा नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "आप से बात करके मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं। मुलाकात के अन्त प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने तस्वीर लेने का सौभाग्य प्राप्त किया।

पुर्तगाल

इस के बाद पुर्तगाल से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ से मिलने का सौभाग्य पाया। पुर्तगाल से 11 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने जलसा सालाना जर्मनी 2017 ई में शामिल हुआ था। इस प्रतिनिधिमंडल में जमाअत अहमदिया पुर्तगाल के एक मित्र प्रोफेसर पावेलॉय मॉराइश शामिल थे। यह पुर्तगाल के एक प्रमुख शहर पोर्टो विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर हैं और पिछले साल देश के सदर के चुनाव में मुख्य उम्मीदवार थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने प्रोफेसर साहिब से हालचाल पूछा:और कहा कि शायद आप जलसा सालाना ब्रिटेन में शामिल हुए थे। इस पर प्रोफेसर साहिब ने कहा कि वह पिछले साल शान्ति संगोष्ठी में शामिल हुए थे और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ से मिलने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था। प्रोफेसर साहिब ने कहा कि अब उन्हें जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का अवसर मिला है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के संदेश बहुत प्यारे, आदरणीय और शांतिपूर्ण थे और मैं चाहता हूं कि आप पुर्तगाल आए और हमारे देश में यह संदेश भी दें। आपका संदेश बहुत उपयोगी साबित होगा। प्रोफेसर ने कहा कि वह उनके लिए संसद में या किसी भी विश्वविद्यालय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की आने और ख़िताब की व्यवस्था कर सकते हैं। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि मैं निश्चित रूप से आऊंगा और अगर संसद में व्यवस्था न भी हो सके तो किसी होटल में इसका प्रबंधन किया जा सकता है और राजनीतिक लोगों को वहाँ भी आमंत्रित किया जा सकता है।

इस के बाद मुहम्मद सालेह तौरे साहिब ने कहा कि हुज़ूर मेरा सम्बन्ध गिनी बिसाऊ से है और मैं पुर्तगाल में रहता हूं और साढ़े दो सालों से मुबल्लिग़ के रूप में काम कर रहा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सालेह साहिब ने कहा कि उन्होंने जामिया अहमदिया घाना से पढ़ाई की है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, " इस लिए आप अंग्रज़ी बोल रहें हैं क्योंकि आप जामिया अहमदिया घाना से पढ़े हुए हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने प्रतिनिधिमंडल के एक और सदस्य अब्दुल्लाह सीसे साहिब से पूछा कि आप कहां से हैं और कब बैअत की? महोदय ने बताया कि हुज़ूर मेरा सम्बन्ध गिनी बिसाउ के से है, लेकिन मैं पुर्तगाल में हूं, और मैंने दो साल पहले बैअत की थी। हुज़ूर अनवर के पूछने पर सीसे साहिब ने कहा कि उनका परिवार अहमदी है और गिनी बिसाऊ में रहता है। इसी तरह आप ने कहा कि मेरे स्वर्गीय भाई और फैमली के दूसरे लोगों को अहमदियत के कारण बहुत कष्ट उठाने पड़े हैं वह कैद में डाले गए लेकिन वह दृढ़ बने रहे। उन की इच्छा थी कि वह समय के ख़लीफा को देखें और मुलाकात करें। वे तो समय के ख़लीफा को अपनी आंखों से नहीं देख सके परन्तु उन का यह सपना आज इस प्रकार पूरा हो रहा है कि मुझे हुज़ूर अनवर को

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 22 February 2018 Issue No. 8

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

देखने और मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। अब्दुल्लाह सीसे साहिबा ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से दुआ करते हुए कहा कि हमारे देश गिनी बसाऊ में मुबल्लग़ीन को भिजवाने की बहुत अधिक ज़रूरत है उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि तुम वहाँ के युवाओं को जामिया अहमदिया भिजवाओ ताकि वे शिक्षा प्राप्त करके वापस अपने देश में काम कर सकें। अब्दुल सीसे साहिब ने कहा कि हमें पाकिस्तानी अनुभवी मुबल्लिग़ों की भी ज़रूरत है। वर्तमान में एक पाकिस्तानी मुबल्लिग़ हैं लेकिन हमें गिनी बिसाऊ में एक से अधिक पाकिस्तानी मुबल्लिग़ की आवश्यकता है। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम ने पूरी दुनिया को मुबल्लिग़ देने हैं और ज्यों-ज्यों मुबल्लिग़ तैयार हो रहे हैं उन्हें विभिन्न देशों में भिजवाया जा रहा है। आप भी युवाओं को तैयार कर के जामिया अहमदिया ताक वे शिक्षा प्राप्त करके अपने देश की सेवा कर सकें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मुहम्मद सालेह साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला से मुखातिब होते हुए कहा कि लगता है कि पुर्तगाल से अधिक गिनी बिसाऊ में मुबल्लिग़ों की जरूरत है क्यों न आप को वापस गिनी बलाओ भिजवा दिया जाए। इस पर, मुहम्मद सालेह तौरे साहिब ने कहा, " जैसे हुज़ूर का आदेश हो मैं हाज़िर हूं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने एक अरब अहमदी दोस्त उम्र बोरग़ साहिब से मुखातिब होते हुए कहा कि लगता है आप पहले मुझ से मिल चुके हैं? उस पर उम्र बोरग़ साहिब ने बताया कि मेरा संबंध मोरक्को से है लेकिन पुर्तगाल में रहता हूँ और साल 2013 ई में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बेनस्रेहिल अज़ीज़ से स्पेन में मस्जिद बैयतुर्रहमान वेलंसीया के उद्घाटन समारोह के अवसर पर मुलाकात का सौभाग्य मिला था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "आप को जलसा कैसा महसूस हुआ? " क्या पहली बार जलसा में शामिल हुए हैं? महोदय ने कहा, कि मुझे पहली बार जलसा सालना जर्मनी में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ है। जलसा की व्यवस्था को देख कर ख़ुशी हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ के भाषण से संतोष और शान्ति प्राप्त हुई।

पुर्तगाल में रहने वाले गिनी बिसाऊ से संबंधित एक दोस्त सालेह गानो साहिब को जलसा सालाना अवसर पर बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली उन्होंने बताया कि यहां आने से पहले पूरी तरह से संतुष्ट नहीं था और मेरे मन में कई संदेह था लेकिन यहां के परिवेश और समय के ख़लीफा के भाषणों का मेरे दिल पर बहुत गहरा असर हुआ और मैंने यह देखा कि समय के ख़लीफा अपने भाषणों को कुरआन और हदीसे नबविया के प्रकाश से प्रस्तुत करते हैं। हुज़ूर अनवर की व्याख्या को सुनकर, मेरा दिल अब संतुष्ट था और मुझे इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं के बारे में पता चला, इसलिए मुझे बैअत का सौभाग्य मिला। " महोदय ने कहा कि हमारी गिनी बिसाऊ की क़ौम अज्ञानती की नींद सो रही है,और उसे जागरूक करने की बहुत आवश्यकता है ताकि वह इस सच्चाई को स्वीकार कर सके।

गिनी बिसाऊ से संबंधित एक युवा अबूबकर सान्या जो पुर्तगाल में सार्वजनिक सुरक्षा में मास्टर कर रहे हैं, उनसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि क्या आप शिक्षा पूरी करने के बाद पुर्तगाल में ही रहेंगे? उन्होंने कहा कि सरकार गिनिया बिसाऊ के वज़ीफा पर अध्ययन करने आए हैं और वापस लौट कर अपने देश की सेवा करना चाहते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "आपका बहुत अच्छा निर्णय है। आपको वापस जाकर देश की सेवा करनी चाहिए। महोदय ने बताया कि जलसा के अवसर पर उन्होंने जो सुरक्षा व्यवस्था देखी थी वह बहुत ही अनोखी थी। चालीस हज़ार को संभालना और वह भी पुलिस की मदद के बिना यह एक असाधारण बात है। इतनी बड़ी भीड़ को संभालना तो एक राज्य के लिए भी बहुत मुश्किल हो जाता। लड़ाई झगड़े और उपद्रव की कई घटनाएं हो जातीं। यहां मुझें जलसा के दौरान पुलिस का कोई आदमी नहीं दिखाई दिया। इस के बावजूद किसी को दूसरे से लड़ते हुए नहीं देखा। बल्कि सभी लोग प्यार और प्रेम के प्यार के प्रति वक्फ दिखाई दिए। इससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। इस प्रकार यह भी कहा कि यदि हमारे अफ्रीकी देशों को पुलिस की मदद से शामिल हो जाए तो ऐसा शांतिपूर्ण जलसा संभव नहीं है।

पुर्तगाल में रहने वाले पुर्तगाल में रह रहे मोरोक्को के एक मित्र, मोहिन्स ज़ुबदी साहिब ने भी जलसा में शामिल होने और बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया। तत्काल टिकट के कारण उन की पुर्तगाल के वफद के साथ हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात नहीं की जा सकी। जाने से पहले, उन्होंने आडियों संदेश में जमाअत और समय के ख़लीफा के से अपने प्यार और मुहब्बत को व्यक्त किया। और इस प्रकार कहा कि

" अस्सलामो अलकुम वरहमतुल्लाह। बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्राहीम मैं जमाअत अहमदिया का बहुत आभारी हूं जिस ने मुझे सच्चे और वास्तविक पवित्र इस्लाम का रास्ता दिखाया जो मैंने कहीं और नहीं पाया। मैंने अहमदियत में सच्चा भाईचारा और मिलजुल कर काम करने की रूह देखी करने की भावना देखी है, जो शायद ही कहीं नज़र आती है। मैं उस समय के लिए जो मैंने इन दिनों गुज़ारा आभारी हूं क्योंकि मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ है। मुझे व्यक्तिगत रूप से समय के ख़लीफा से मुलाकात का मौका नहीं मिला, लेकिन मैं उन की सेवा में सलाम पेश करता हूं मुझे आशा है कि अगली बार निश्चित रूप से मिलूंगा। धन्यवाद अहमदिया

पुर्तगाल के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकात के बाद यह प्रोग्राम एक बज कर पचास मिन्ट पर खत्म हुआ। अन्त में वफद के मैम्बरों ने हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद, शारजाह, कादियान, अल्बानिया, दुबई, फिनलैंड और माल्टा देश से सम्बन्ध रखने वाली चार फैमलीज़ के दस और दो दोस्तों ने व्यक्तिगत रूप से मुलाकात करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ नमाज़े ज़ोहर व अस्र अदा करने के लिए मस्जिद के मर्दाना हॉल में पधारे। नमाज़ों की अदायगी से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने आदरणीय ज़फर इस्लाम खान जमाअत Dreieich जर्मनी के पिता श्री आदरणीय अब्दुस्सलाम नासिर साहिब के नमाज़े जनाज़ा हाज़िर पढ़ाई। 24 अगस्त 2017 ई के अंत में 86 साल बाद वफात पा गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मृतक अपने पीछे रहने वालों में चार विधवा के अतिरिक्त चार पुत्रों और पांच बेटियां को छोड़ा। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचे करे पीछे रहने वालों को धैर्य प्रदान करे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 12 का शेष

का वर्णन था।

इस कार्यक्रम में निम्नलिखित शॉर्ट डौक्यूमैंटरी भी दिखाई गईं। कादियान के पवित्र स्थानों का संक्षिप्त परिचय, संक्षिप्त इतिहास जलसा सालाना, कादियान जलसा सालाना 2017 ई के दृश्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत-ए-तैयबा की घटनाओं को इनट्रवियूज़ के रूप में पेश किया गया और कादियान के दृश्य दिखाए गए। एक अमेरिकी अहमदी की अहमदियत स्वीकार करने की रिकॉर्डिंग Play की गई, ख़िलाफत हक्का इस्लामिया के परिचय पर आधारित वीडियो, ख़िलाफत अहमदिया की बरकतें और विश्वव्यापि जमाअत अहमदिया की तरकी। हर प्रोग्रामों में विभिन्न देशों से टेलीफोन कॉलर्स को शामिल किया गया। अल्लाह तआला की कृपा के साथ, अफ्रीका के लोगों में उल्लिखित कार्यक्रमों को बहुत पसन्द किया गया। अल्लाह तआला सभी सेवा करने वालों को जिन्होंने बहुत ईमानदारी वफ़ा के साथ काम किया इसी तरह जलसा में शामिल होने वालों को जो दूरदराज़ से श्रम उठाकर और वित्तीय बोझ सहन कर जलसा में शामिल हुए, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनाए। आमीन।

(समाप्त)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad